के.के.सिंह मयंक

नन्हाईयां

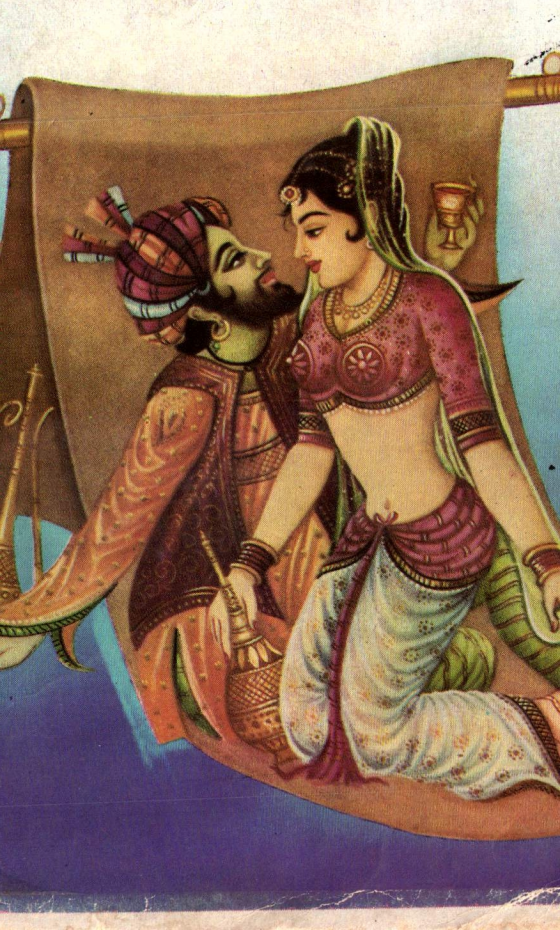

तन्हाइयां

के० के० सिंह 'मयंक' अकबराबादी

साधना पाकेट बुक्स, दिल्ली-७

प्रथम संस्करण : 1991

प्रकाशक :

साधना पॉकेट बुक्स
39 यू० ए० बँगलो रोड,
नई दिल्ली-110007

फोन : 2516715, 2914161

मूल्य : दस रुपये

मुद्रक : के० पी० प्रिंटर्स, 9/3399, गांधीनगर, दिल्ली-31

शायर के बारे में

आज के हिन्दोस्तान के जाने माने शायरों में जनाब के० के० सिंह 'मयंक' का नाम बड़े अदब के साथ लिया जाता है। आप उर्दू शायरी की जदीद तथा रिवायती शायरी की कड़ी के रूप में जाने जाते हैं। आपकी भाषा उर्दू तथा हिन्दी का वो सुन्दर समागम है जिसे हम हिन्दुस्तानी कह सकते हैं। यही कारण है कि बिना किसी लुगद (डिक्शनरी) की सहायता के आम आदमी आप की शायरी को समझ सकता है, तथा पसंद करता है, जुबान के शेर आपकी शायरी की विशेषता हैं। चलते चलते शेर कहना आपकी फितरते हैं। आप एक फिल्वदी शायर हैं।

जिन्दगी के हर पहलू पर आपने शेर कहे हैं। हुस्नो-इश्क, हिना-गुलशन, खिजां-बहार, गम-खुशी, जामो-मीना, धर्मो-ईमां, वस्ल-जुदाई, वगैरह-वगैरह सभी पर आपने शेर कहे हैं। इसके अलावा कौमी एकता, सामाजिक बुराइयों को दूर करना तथा अन्य दौरे-हाजिर के मसलों पर आपने कलाम लिखा है। वैसे तो आप मुख्यतः उर्दू गजल के शायर हैं लेकिन नज्म, ही के गीत राष्ट्रीय कविताएं, भजन, हम्द, नात, मनकबत , अलविदा, आमद, आदि भी आपने खूब लिखे हैं।

आपकी तीन किताबें हिन्दी में छप चुकी हैं—जिनके नाम हैं 'कुछ गीत अनाम के नाम' (सप्तरंग रतलाम द्वारा प्रकाशित), जज्बए-इश्क कीर्ति साहित्य प्रकाशन रतलाम द्वारा

प्रकाशित, तथा 'मयंक की गजलें' (डायमण्ड पाकेट बुक्स-दिल्ली द्वारा प्रकाशित)।

इनके अलावा आपकी दो पुस्तकें उर्दू में प्रकाशित हो चुकी हैं जिनके नाम हैं 'सिम्ते काशी से चला' (मक्तबे-दीनो अदब लखनऊ द्वारा प्रकाशित) तथा 'जुनून' (शाने हिन्द न्यू दिल्ली द्वारा प्रकाशित)। इन सबके अलावा इनकी एक पुस्तक स्टार पाकेट बुक्स न्यू दिल्ली द्वारा हिन्दी-उर्दू में (साथ-साथ) भी प्रकाशित हुई है जिसका नाम है 'मयंक की शायरी।'

आपकी गजलें आकाशवाणी तथा गीत दूर-दर्शन पर भी प्रसारित होती रहती हैं। हिन्दोस्तान के मायानाज गजलगायक, कव्वाल आदि आपके कलाम को आजकल खूब गा रहे हैं, जिनमें मुख्य ये हैं—अजीजनाजां, अख्तर आजाद शंकरशंभू, शकीलाबानो भोपाली, रमकुमार शंकर, सईद फारीद जयपुरी, शमीम नईम अजमेरी, नूरेबा, जावरावाले और अहमद हुसैन-मुहम्मद हुसैन।

आपका कलाम हिन्दी-उर्दू की पत्रिकाओं और अखबारों में भी पढ़ने को मिलता है।

जनाब के० के० सिंह 'मयंक' का जन्म ग्राम पडरारी जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश में श्री ईश्वरी प्रसाद तथा श्रीमती नारायणी देवी के घर में हुआ। आपके पिताजी और आपके बड़े भाई जनाब स्व० महेश चन्द्र ने आपको ऊंची से ऊंची शिक्षा दिलवाई। आपने सन् १९६६ में एम. ए. एल. एल. बी. तथा १९६९ में इण्डियन रेलवे ट्राफिक सर्विस में प्रवेश किया। आज आप इसी सेवा के तहत पश्चिम रेलवे के कोटा मण्डल में—वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य अधीक्षक के ओहदे पर फाईज हैं। इतनी जिम्मेदार पोस्ट के बावजूद इतनी अच्छी और पुख्ता कलाम कह रहे हैं, इसको एक ईश्वरीय देन ही कहा जा सकता है।

आपके बड़े भाई स्व० श्री महेश चन्द्र जो एक रेलवे के उच्च पद पर थे। स्वयं भी एक बड़े विचारक तथा अदब का शौक और जौक रखने वाले थे। जनाब 'मयंक' की शायरी पर उनके विचारों का पूरा-पूरा प्रभाव पड़ा है, उनके लिए उनको एक शेर समर्पित है :—

है फरिश्तों से भी बढ़ कर ऐसे इन्सानों की जात।
जो किसी को दे के सब कुछ लौट जाएँ खाली हाथ।।

जनाब के० के० सिंह 'मयंक' की शरीके हयात श्रीमती सरोज सिंह भी एक अच्छी सूझ-बूझ तथा शेरो शायरी में दिल-चस्पी लेने वाली महिला हैं, आपको अगर जनाबे 'मयंक' की प्रेरणा कहा जाये तो भी गलत न होगा।

जनाब के० के० सिंह 'मयंक' ने हजारों की तादाद में गजलें कही हैं जिनमें से करीब एक हजार तो छप चुकी हैं व ताजातरीन गजलें हम यहां इस मजमुआए कलाम 'तन्हाईयां' में पेश कर रहे हैं। उम्मीद है आपको यह गजलें पसन्द आयेंगी। आप सब हजारात से दरख्वास्त हैं कि अपने जरीने मशवरों से हमें तथा शायर को आगाह करें। हमने शायर के बारे में जो कुछ ऊपर कहा है उसके अलावा हम यह जरूरी समझते हैं कि गजल का मतलब भी थोड़े में अपने पाठकों को बता दें—गजल चालू—(लूगत) 'शब्दकोष' में गजल का मतलब है औरत से या महबूब से बात करना। मगर बोलचाल की जुबान में गजल उस कलाम को कहते हैं जिसके दो पहले मिसरों में रदीफ और काफिए हों। ऐसे शेर को मतला कहते हैं, ऐसे मतले एक से अधिक भी हो सकते हैं वह जिन्हें मतला-ए-सानी या हुस्ने मतला कहते हैं। इनके अलावा कितने भी शेर गजल के हो सकते हैं जिनके दूसरे मिसरों में काफिया तथा रदीफ हों। सबसे बाद में कहा जाने वाला शेर मकता कहलाता

है जिसमें शायर का नाम या तखल्लुस होता है। मकता से पहले का शेर आखिरी शेर कहा जाता है। गजल का हर शेर अपने आप में एक मुकम्मल मजमून लिए होता है या उसमें कोई खास बात होती है। हर शेर अलग-अलग रंग लिए भी हो सकता है। जिस गजल के हर शेर में एक ही रंग होता है उसे मुसल्लस गजल कहते हैं।

आज के दौरे हाजिर में जो गजल कही जा रही है उनमें औरत से बात करने के अलावा जिन्दगी के हर पहलू की बात भी होती है। उसमें सियासत समाज के हालात, श्रृंगार और विज्ञान के चमत्कारों का समावेश भी होता है, इसीलिए ये सिल्फ 'गजल' खूब कामयाब है।

अगर आप ऊपर लिखे गजल के परिचय से परिचित होकर जनाब के० के० सिंह 'मयंक' की गजलों को पढ़ेंगे तो आप ज्यादा मजा ले सकेंगे। हम आपसे फिर कहेंगे कि आप इन गजलों को पढ़ कर अपनी राय हमें या शायर को जरूर भेजें, हम आपके आभारी होंगे।

जनाब के० के० सिंह 'मयंक' का पता है :—

के० के० सिंह 'मयंक' अकबराबादी,
एच.आई.जी.—५, न्यू शाहगंज,
आगरा (उत्तर प्रदेश)

ग़ज़ल

तुम्हारे चाहने वाले तो बार-बार मिले।
मिलो न तुम तो कहां चैन और करार मिले।।

वो खुद भी हो गए, हमको भी कर दिया रुसवा।
वफा की राह में ऐसे भी यार गार मिले।।

तलाश उनकी मुझे उम्र भर रहे, यूं ही।
न खत्म हो कभी, अब ऐसी रहगुजार मिले।।

शिकस्ता दिल का हो, कुछ ऐसा ऐहतेमाम के अब।
जो तेरी बज्म में आए, उसे करार मिले।।

अजीब कैफ ये महफिल पै हो गया तारी।
शिकस्ता दिल से जो, देखो शिकस्ता तार मिले।।

तुम्हारे प्यार की धूप, छांव क्या कहिए।
कभी खुशी कभी गम हमको बेशुमार मिले।।

वहां पै कौन बने अपना हम ख्याल 'मयंक'।
हर एक सिम्त जहां हमको इन्तजार मिले।।

गजल

तीरगी हो के, नूर हो यारो।
वो न आंखों से दूर हो यारो।।

वो हों भगवान, या खुदा लेकिन।
उनका जलवा जरूर हो यारो।।

उनकी सूरत रहे निगाहों में।
इश्क में वो सुरूर हो यारो।।

उनको हर रूप में मैं पहचानूं।
इस कदर तो गऊर हो यारो।।

है हर इक चीज बे सिबात तो फिर।
किस पै किस को शुरूर हो यारो।।

क्यूं वो बहकें, के जिन निगाहों में।
जल्व-ऐ-कोह-ऐ तूर हो यारो।।

वो बुलायें मुझे सजा के लिये।
काश ऐसा कुसूर हो यारो।।

साथ थे तुम 'मयंक' के कल तक।
आज क्यूं दूर-दूर हो यारो।।

गजल

दे दी शोहरत, हर इक फसाने को।
उफ, ये क्या हो गया, जमाने को॥

जब गुलिस्तां नहीं तो कुछ भी नहीं।
आग लग जाये आशियाने को॥

हो सके तो मिरे हुजूर कभी।
बख्शो रौनक रीब खाने को॥

बाम पर आ रहे हैं बे पर्दा।
वो मिरा जर्फ आजमाने को॥

अब तो ऐहले हवस भी देख 'मयंक'।
खेल समझे हैं दिल लगाने को॥

●

गजल

काविश-ए-नाकाम प रोता है क्यों।
गोया अब अन्जाम पै रोता है क्यों॥

क्यों मसर्रत पै हंसा ऐ तंग दिल।
गर्दिश-ए-नाकाम पै रोता है क्यों॥

सोचिये ए कारवां वालों के अब।
राहबर हर गाम पै रोता है क्यों॥

वो वफाओं का सिला देंगे जरूर।
इस ख्याले खाम पै रोता है क्यों॥

जब तुझे है इश्क का दावा 'मयंक'।
फिर भला अन्जाम पै रोता है क्यों॥

●

गजल

जब किसी गुल्फाम ने धोखा दिया।
हर खुशी ने जाम ने धोखा दिया॥

कुछ तो तुम भी फितरतन थे बेवफा।
कुछ दिल-ऐ-नाकाम ने धोखा दिया॥

हमने समझा था सकूं मिल जायेगा।
हां मगर हर जाम ने धोखा दिया॥

खुद गरज आया नजर हर एक दोस्त।
हर हंसी पैगाम ने धोखा दिया॥

जिन्दगी की धूप ही रास आ सकी।
हर सुनहरी शाम ने धोखा दिया॥

इश्क का आगाज था अच्छा 'मयंक'।
हां मगर अन्जाम ने धोखा दिया॥

●

गजल

देख कर हुस्न गुल अजारों का।
रंग उड़ने लगा बहारों का॥

जिनमें मंजिल का कुछ निशान मिले।
क्या करें ऐसी रह गुजारों का॥

अपने अश्कों को रोक कर रखिए।
तोड़िए दिल न गम गुसारों का॥

ना खुदा है, मिरा खुदा हाफिज।
गम न कर, मुझ से बेसहारों का॥

रोशनी से 'मयंक' की, हम दम।
नूर मद्धम हुआ सितारों का॥

●

गजल

बुझ गए दीप जल गए साए।
आने वाले मगर नहीं आए।।

मेरी खातिर जो गम से टकराए।
उनकी दिल बस्तगी पै प्यार आए।।

वस्ल के बाद है जुदाई भी।
दिल इसी बात से है घबराए।।

खो गया जब भी रह गुजारों में।
उन के नक्शे कदम नजर आए।।

हो मसर्रत की रोशनी कैसे।
गम के बादल 'मयंक' पर छाए।।

●

गजल

कुछ और ठहरो न जाओ के नींद आ जाए।
कुछ और गीत सुनाओ के नींद आ जाए।।

गम-ए-फिराक को तारीकियों से निस्बत है।
जरा चिराग बुझाओ के नींद आ जाए।।

गम-ए-जहान के किस्से बहुत सुने, लेकिन।
गजल अब ऐसी सुनाओ के नींद आ जाए।।

तुम्हें तो खुल के ना आने दिया जमाने ने।
तसव्वुरात में आओ के नींद आ जाए।।

तुम्हारे वास्ते नींद उड़ गई सितारों की।
'मयंक' बन के तुम आओ के नींद आ जाए।।

●

गजल

न मिलते आप तो बेमौत मर गए होते।
तलाश-ए यार में जाने किधर गये होते।

तुम्हारे साया-ऐ-गेसू में उम्र कटती अगर।
हमारे दिन भी यकीनन संवर गये होते॥

ये स्याह रात, ये तन्हाई, ये हसीं मौसम।
न आते आप तो हम घुट के मर गए होते॥

जो एक बार तुम हंस कर के देख लेते हमें।
तो फिर गमों से भी हंस कर गुजर गए होते॥

जो सामने मिरे आए हैं सुर्ख जोड़े में।
'मंयक' काश वो दिल में उतर गए होते॥

●

गजल

यूं तुन्द थे मिजाज सहारे नहीं मिले।
तूफान को जिस तरह जो किनारे नहीं मिले॥

तूफान-ऐ-आरजू मे सफीना रहा मिरा।
तुम ना खुदा थे, फिर भी किनारे नहीं मिले॥

क्यों आपकी नवाजिश-ऐ-पैहम के बावजूद।
नाकाम जुस्तजू को सहारे नहीं मिले॥

ये क्या हुआ, क, गैर तो मिलते रहे मगर।
जिनसे उम्मीद थी, वो सहारे नहीं मिले॥

घेरे हुए थे, तुमको बराए फरेब जो।
कुर्ब-ऐ-'मयंक' अब वो सितारे नहीं मिले॥

●

गजल

बिन तुम्हारे तल्ख मेरी जिन्दगानी हो गई।
तुम जो रूठे, तो खफा मुझसे जवानी हो गई॥

आप खुश थे, मौत पर मेरी, फिर ये हमनवां।
क्यों निगाह-ए-नाज उनकी पानी-पानी हो गई॥

लाख भी हम तुम बचे, रुस्वाई से फिर भी हुजूर।
हर कहानी आपकी मेरी कहानी हो गई॥

हर नजारा खूबसूरत-सा मुझे लगने लगा।
आपकी नजरों की जब से मेहरबानी हो गई॥

अब कहां काबू में रहता है, हमारा दिल, भला।
अब तो बस दिल पर तुम्हारी हुक्मरानी हो गई॥
मिल गई है रूह की तारीकियों को रोशनी।
जब 'मयंक' हम पर तुम्हारी जो फिशानी हो गई॥

गजल

याद में बेकरार होता हूं।
बारहा अश्क बार होता हूं॥

तेरी आंखों में देख कर आंसू।
मैं बड़ा सोग वार होता हूं॥

जोके-ऐ-सज्दा में जाहिदो अक्सर।
खुद मैं बेइखत्यार होता हूं॥

ऐक लज्जत नसीब होती है।
जब भी मैं गम गुसार होता हूं॥

देख कर उनकी मदभरी आंखें।
खुद,व,खुद वादा ख्वार होता हूं॥

तुम समझते नहीं अभी शायद।
किसलिए बेकरार होता हूं॥

बदलियों में 'मयंक' मैं अक्सर।
एक उजड़ा दयार होता हूं॥

ग़ज़ल

क्या मैं बताऊं, क्या है मन में।
कौन बसा है हर धड़कन में॥

ये खिल्वत, ये याद तुम्हारी।
फूल खिले हैं, सूने बन में॥

क्यों शरमा कर, मुंह फेरा है।
क्या देखा, तुमने दरपन में॥

चांदनी बन कर तुम आए हो।
यादों के सूने आंगन में॥

उनके ग़म में अश्क बहे, यूं।
जैसे रिम झिम हो सावन में॥

बन कर दीप जरा आ जाओ।
फिर इस अंधियारे जीवन में॥

किसका दर्द बसा है, देखो।
इन नयनों के सूनेपन में॥

उफ! वो जवानी में खोया है।
साथ दिया जिसने बचपन में॥

चेहरा जुल्फों में है, ऐसे।
जैसे 'मयंक' हो बीच गगन में॥

ग़ज़ल

जब जब आई याद तुम्हारी।
दूर हुई मन की अंधियारी ॥

जब तुमने लहराये गेसू।
महक उठी मन की फुलवारी ॥

उनकी सुर्ख आंखों में आंसू।
यक्जा हैं शबनम, चिंगारी ॥

जब रुखसार दिखा जुल्फों से।
जाग उठी मन की उजियारी ॥

अपनी किस्मत में बिरहा है।
काहे को उनकी बाट निहारी ॥

कल बेकल, थे अपने लिए वो।
आज 'मयंक' अपनी है, बारी ॥

गजल

अब तो गम में भी मुस्कुराना है।
क्योंकि दुश्मन मेरा जमाना है ॥

क्या कहा, खौफ है जमाने का ।
ये हकीकत नहीं बहाना है ॥

कातिलों के हुजूम में हूं, मगर ।
दिल मिरा आपका निशाना है ॥

ऊंचे महलों से दिल जो घबराये ।
फिर ये हाजिर गरीब खाना है ॥

जिसका कौनेन में, नहीं हम सर।
दरअसल इश्क वो खजाना है॥

ऐ 'भयंक' सिर्फ आपकी खातिर ।
चांदनी बनके जगमगाना है ॥

गजल

इस तरह के सितम भी तो ढाने लगते हैं लोग।
हर रहगुजर में खार बिछाने लगे हैं लोग ॥

इश्क-ओ-खुलूस-ओ-प्यार, मोहब्बत के नाम पर।
अब नफरतों के द्वीप, जलाने लगे हैं लोग ॥

हर सिम्त हैं, सितम की चितायें जली हुई।
इस देश को मशान बनाने लगे हैं लोग ॥

हम एक ही थे एक रहेंगे तमाम उम्र।
इस बात का मजाक उड़ाने लगे हैं लोग ॥

क्यों एकता के गांव को छोड़ आए हैं भला।
क्यों नफरतों के शहर बसाने लगे हैं लोग ॥

हर सुबह-ऐ-नौ को खून-ऐ-गरीबां निचोड़ कर।
हर शब नए चराग जलाने लगे हैं लोग ॥

दीवानगी का आह ये आलम है ऐ 'मयंक'।
अपने ही खूं से आज, नहाने लगे हैं लोग ॥

गज़ल

अगर है सुनने की फुर्सत, हमारी बात सुनो ।
के, छोड़ो साज-ए- मुहब्बत, हमारी बात सुनो ॥

ये दुश्मनों में भी इक रोज गुल खिलायेगी ।
सभी शो कर लो मुहब्बत हमारी बात सुनो ॥

यकीन कीजे के शोहरत से और हुकूमत से ।
बड़ी है प्यार की दौलत, हमारी बात सुनो ॥

हर एक सिम्त जहां बेकसी हो गुर्बत हो ।
तो काम आएगी मेहनत, हमारी बात सुनो ॥

न बेचो अपने वतन के विकार को ऐसे ।
करो अब ये तिजारत, हमारी बात सुनो ॥

'मयंक' वक्त के नमरूद से जरा कह दो ।
बुझाए मिश्अल-ऐ-नफरत हमारी बात सुनो ॥

शिकस्ता दिल को कुछ ढारस बंधा जाते तो अच्छा था।
बहर सूरत किसी के काम आ जाते तो अच्छा था ॥

सरे साहिल तो दुनियां हंसने वाली थी बहुत लेकिन।
तुम्हीं तूफान बन कर मुझ पे छा जाते तो अच्छा था॥

परेशां हम नहीं होते न होते आप भी नादिम।
अगर वादे पे अपने आप आ जाते तो अच्छा था॥

वफा पर आपकी, मैंने यकीं तो कर लिया लेकिन।
गिले, शिकवे, गले मिल कर मिटा जाते तो अच्छा था॥

अभी तक हिचकियां कहती हैं, हमको याद करते हो।
मुझे रुखसत से पहले ही भुला जाते तो अच्छा था ॥

भटकती तो नहीं, ये जिन्दगी गम के अंधेरे में।
चिराग-ऐ-इश्क तुम दिल में जला जाते तो अच्छा था॥

'मयंक' का प्यार दुनिया में, कभी रुस्वा नहीं होता।
विकार-ऐ-इश्क दुनियां को बता जाते तो अच्छा था॥

गजल

बिन तुहारे मुझे हौसला कौन दे।
लगजिशों को मेरी आसेरा कौन दे।।

जब गुनाहगार मुन्सिफ ही होने लगे।
ऐसी हालत में किसको सजा कौन दे।।

हर तरफ तू ही तू बस है जल्वा फिगन।
मैं किधर जाऊं, ये फैसला कौन दे।।

शहर में खो चुका है, जो अपना बजूद।
भीड़ में अब उसे रास्ता कौन दे।।

तुम भी हो दूर दामन भी है चाक-चाक।
शोल-ए-जब्त-ऐ-गम को हवा कौन दे।।

हम नफस जिसका हो खुद मसीहा 'मयंक'।
ऐसे बीमार को फिर दवा कौन दे।।

●

गजल

उनकी हर बात भली हो, ये जरूरी तो नहीं।
कैफ-ए-उल्फत से भरी हो, ये जरूरी तो नहीं।।

तुम को आना है तो, आ जाओ कजा से पहले।
उम्र पाबन्द मेरी हो, ये जरूरी तो नहीं।।

जो शब-ओ-रोज इबादत में गुजारे रब की।
वो गुनाहों से बरी हो, ये जरूरी तो नहीं।।

बेवफाई ने तेरी, तोड़ दिया, शीशा-ऐ-दिल।
तूने आवाज सुनी हो, ये जरूरी तो नहीं।।

आरजू में जो नजर ढूंढे तुझे शाम-ओ-सहर।
वो तेरे दर पै झुकी हो, ये जरूरी तो नहीं।।

जिसको अल्लाह ने दौलत से, नवाजा हो 'मयंक'।
उसकी किस्मत में खुशी हो, ये जरूरी तो नहीं।।

●

गज़ल

जमाने भर में कोई तुम सा हम नवा न लगे।
मगर तुम्हारे खयालों में कुछ वफा न लगे।।
मैं एक बात कहूं, गर तुम्हें बुरा न लगे।
तुम्हारे पास सभी कुछ है आईना न लगे।।
तुम एक हूर हो उतरी हो आस्मां से अभी।
खुदा करे तुम्हें दुनियां की कुछ हवा न लगे।।
वो जिसकी आपने बढ़ कर न की मसीहाई।
दवा तो छोड़िये उसको कोई दुआ न लगे।।
तुम्हें तो जिसने भी देखा, उसी के होश उड़े।
तुम्हारी बज्म में कोई भी पारसा न लगे।।
हर इक के वास्ते यकसां है रोशनी ऐ 'मयंक'।
नजर में इसकी कोई शख्स दूसरा न लगे।।

●

गजल

मौज-ए-नसीम-ऐ-सुबह का पैगाम आ गया।
हम तक भी आज दौर-ऐ-मय-ऐ-जाम आ गया।।
कल शब सितारे जिसके तजस्सुस में थे रवां।
वो माह ताब आज लब-ए बाम आ गया।।
ये तज्किरे, ये शोहरतें बढ़ती चली गई।
जब होके कोई इश्क में बदनाम आ गया।।
कुछ आपकी वफा ने दिया, साथ शाम-ऐ-गम।
कुछ मेरा हौसला भी मिरे, काम आ गया।।
सच पूछिये तो रस्म-ऐ मोहब्बत यही तो है।
शोहरत इधर हुई, उधर इल्जाम आ गया।।
क्यों शिकव-ऐ-जफा है लबों पर तेरे 'मयंक'।
इक बेवफा पै जब दिल-ऐ-नाकाम आ गया।।

●

गजल

ये मत पूछो कल क्या होगा।
सोचो अगले पल क्या होगा।।

जिसने निकाले तूफां के बल।
उसकी जिबीं पर बल क्या होगा।।

मुझ से कल से, कल का वादा।
और न जाने, कल क्या होगा।।

झील में दौलत की मत जाना।
इस जैसा दलदल क्या होगा ।।

एक मो अम्मा है, ये जीवन।
समझो इसका हल क्या होगा ।।

दिल में नहीं जब, उसका जज्बा।
जाकर फिर जंगल क्या होगा।।

जिसमें पलते हैं, पैगम्बर ।।
मां जैसा आंचल क्या होगा ।।

अश्क-ऐ निदामत से भी बढ़ कर।
ए 'मयंक' गंगा जल क्या होगा।।

गजल

ऐ दोस्त तेरा जलवा इधर और उधर भी है।
तू आईना है और खुद आईना गर भी है॥

कुछ तो सुरूर-ए-दिल की है, फितना तराजियां।
कुछ आपकी निगाह का कैफ-ए-नजर भी है॥

चेहरे पे तेरे जुल्फ बिखरने को क्या कहूं।
इक पल में शाम, दूसरे पल में सहर भी है॥

सजदा किया है, यूं तो फरिश्तों ने आपको।
लेकिन तुम्हारे दर पै निगूं मेरा सर भी है॥

ये बात काश कोई घटाओं से कह सके।
सहरा में थोड़ी दूर पै इक मेरा घर भी है॥

खाने लगी है बाड़ गुलिस्तां को आज कल।
ऐ बागबां चमन की तुझे कुछ खबर भी है॥

सर को झुका के पाई बुलंदी 'मयंक' ने।
मालूम तब हुआ कै, दुआ में असर भी है॥

गजल

मैंने कहा हो जल्वागर, उसने कहा नहीं नहीं।
मैंने कहा मिला नजर, उसने कहा नहीं नहीं ॥

मैंने कहा, के शाम है, उसने कहा के, जाम है।
मैंने कहा, के जाम भर, उसने कहा नहीं नहीं ॥

मैंने कहा पयाम लो, उसने कहा सलाम लो।
मैंने कहा ठहर, ठहर, उसने कहा नहीं नहीं ॥

मैंने कहा, के, रुख इधर, उसने कहा है, चश्मतर।
मैंने कहा के, सब्र कर, उसने कहा नहीं नहीं ॥

मैंने कहा, कहां मिलें, उसने कहा जहां कहें।
मैंने कहा, के: बाम पर, उसने कहा नहीं नहीं ॥

मैंने कहा, के, हो नजर, उसने कहा कहां किधर।
मैंने कहा 'मयंक' पर, उसने कहा नहीं नहीं ॥

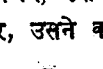

गजल

इक बार देखिये रुखे-ए-जानां को देखिये।
फिर दिल की ताब दीद-ए-हैरां को देखिए॥

गर देखना है, कुछ मेरा, हाल-ए-गुम-ए-फिराक।
तो आप भी रुख-ए, शब-ए-हिजरां को देखिये॥

गर भूलती है जिन्दगी की उलझनें जनाब।
रख कर किसी के जुल्फ-परीशां को देखिये॥

क्या खो दिया, क्या, पा लिया, ये मत भूल जाइये।
चलने में कब्ल सौत के सामां को देखिये॥

आ जायेगी 'मयंक' समझ में ये कायनात।
गुलशन से दूर जाके बयाबां को देखिये॥

●

गजल

आप जब जब मेरे रंजो गम में शामिल हो गए।
रास्ते कुछ इस कदर सिमटे के मंजिल हो गए॥

आप मेरी कब्र पर सर धुन रहे हैं आज कल।
आप भी अब जज्ब-ए-उल्फत के काइल हो गए॥

बाल-ओ-पर की खैर अब कैसे मनाऊं बोलिये।
चारसू पैदा जहां में मेरे कातिल हो गये॥

इक मिरी कुर्बानि-ए-हस्ती से क्या है फायदा।
लाख पैदा आपकी चाहत में बिस्मिल हो गये॥

जाने क्या तासीर थी उनकी निगाहों में 'मयंक'।
कुछ तो बिस्मिल हो गए कुछ नीम बिस्मिल हो गये॥

●

निगाह-ए-नाज कहती है किसी पर आप मरते हैं।
मगर ये इक हकीकत है बयां करने से डरते हैं॥

मोहब्बत का हसीं खाका न होता पुर कशिश कैसे।
के हम एहल-ए-वफा इसमें लहू से रंग भरते हैं॥

कहीं होता है कोई पास तो तुम पास होते हो।
तुम्हारी याद में तन्हाई के लम्हे गुजरते हैं॥

जब आहट कान में आती है उनके पाए नाजुक की।
तखय्युल में मुसल्सल सैकड़ों अरमां उभरते हैं॥

तमन्ना झूम उठती है उम्मीदें रक्स करती हैं।
वो जब नजरें झुकाये दिल की नजरों से गुजरते हैं॥

ये किस की आज आमद है के रोशन है 'मयंक' इतना।
ये किसके खैर मकदम को सितारे रक्स करते हैं॥

गजल

चैन के असबाब सब मिल जायेंगे।
बे हिजाबाना वो जब मिल जायेंगे ॥

रोशनी को तू समझ लेगा अगर।
तीरगी के भी सबब मिल जायेंगे ॥

पीर-ए-हक की कुर्बतें जो मिल गईं।
जिन्दगी जीने के ढब मिल जायेंगे ॥

बे अदब लोगों को देखो गौर से।
कुछ तो अंदाज़-ए अदब मिल जायेंगे ॥

दिल की बातें खुद बयां होंगी मयंक।
बे जुबानी को जो लब मिल जायेंगे ॥

●

गजल

चले भी आओ के: कुछ बात रूबरू कर लें।
कुछ अपने उलझे मसाइल में गुफ्तगू कर लें ॥

सुहानी रात है, हम तुम हैं, और तन्हाई।
जो आप चाहो तो, तवमील-ए-आरजू कर लें ॥

बस अब इसी में हैं वाबस्ता यार की खुशियां।
हम अपना जाम-ए-तमन्ना लहू लहू कर लें ॥

अजल से एहल-ए-तलब का विकार है इसमें।
के चाक दामन-ए-उम्मीद खुद रफू कर लें ॥

हां जिनके वास्ते मिटना है, एक रोज 'मयंक'।
वो सामने हों तो पूरी ये आरजू कर लें ॥

●

गजल

उलझे हुये हैं, दाम-ए-जमाम ओ-मकां से हम।
पावें निजात, लायें वो किस्मत कहां से हम॥

ऐहल-ए-जमीन की है नजर आस्मां पै क्यूं।
पूछेंगे ये सवाल, कभी आस्मां से हम॥

हमको जो अपने मंजिल-ए-मकसद की दे खबर।
ऐसे बशर को ढूंढ़ के लायें कहां से हम॥

क्या खौफ खायें गर्दिश-ए-अय्याम से के जब।
लेकर उठे हैं फैज तेरे आस्तां से हम॥

दुश्मन अजीज हो गये, पर क्या बताइये।
खाये हुये हैं चोट, किसी मेहरबां से हम॥

उसकी रजा पै छोड़ दो, अपना हर एक काम।
ये बात सुन रहे थे, किसी बेजुबां से हम॥

गुलशन हमीं से, हुस्न-ए-गुलिस्तां हमीं से है।
उम्मीद क्या 'भ्रमर' रखें बागवां से हम॥

ग़ज़ल

हमारी जान जाती है तो जाए।
मगर उन पर कोई तोहमत न आए ,।

ग़मों की भीड़ में ऐसे घिरा हूं।
घटा में जैसे सूरज डूब जाये ।।

तुम्हारे घर तो क्या मालिक के घर भी।
नहीं जायेंगे हर्गिज बिन बुलाये ।।

जो कल बा होश थे, बेहोश हैं वो।
इन्हें क्या हो गया बैठे बिठाये ।।

'मयंक' अब मुन्तजिर बैठा हूं कब से।
वफा की राह में आंखें बिछाये ।।

●

ग़ज़ल

नफरत के बयाबां में मोहब्बत न ढूंढ़िये।
जंगल के आदमी में मुरब्बत न ढूंढिये ।।

जिसके नहीं है दिल में कुछ एहसास की चुभन।
आंखों में उसकी अश्क-ए-निदामत न ढूंढिये ।।

मिटने का अहद कर लिया है जिसने इश्क में।
दुनियां में उस बशर को सलामत न ढूंढिये ।।

राह-ए-हवस में ठोकरें खाते जो रात दिन।
उनके लहू में जज्ब-ए गैरत न ढूंढिये ।।

शैतानियत की छांव में अब बैठ कर 'मयंक'।
इन्सानियत में रंग-ए शराफत न ढूंढिये ।।

●

गजल

दिल-ओ-दिमाग जलेंगे तो आह कर लेंगे।
गम-ए-हयात से यूं भी निबाह कर लेंगे।

अगर हमें न मिले तुम तो फिर खुदा की कसम।
तुम्हारी चाह में हस्ती तबाह कर लेंगे॥

वो जिनको दैर-ओ-हरम में सुकून-ए-दिल न मिले।
दर-ए-हबीब को वो सजदागाह कर लेंगे॥

तुम्हारी याद में रातों का जिक्र ही क्या है।
के हम तो अपनी सहर भी सियाह कर लेंगे॥

बसा के दिल में 'मयंक' उनका चांद सा चेहरा।
हम अपने दिल को भी अब जल्वागाह कर लेंगे॥

●

गजल

सोज-ए-गम देके वो, इरशाद किये जाते हैं।
जा तुझे चैन से आजाद किए जाते हैं॥

इश्क-ए-सादिक में मिटाई है, जिन्होंने हस्ती।
वो ही जांबाज सदा याद किए जाते हैं॥

कत्ल करते हैं मगर, उफ नहीं करने देते।
जुल्म पर जुल्म वो ईजाद किये जाते हैं॥

मुस्कुराते हुए, फिर बाद-ए-फरदा करके।
दिल-ए-नाशाद को वो शाद किए जाते हैं॥

उनसे उम्मीद-ए-करम, आज भी रखते हैं 'मयंक'।
जो के बेदाद पै बेदाद किये जाते हैं॥

●

गज़ल

वो समझते ही नहीं रस्म-ए-वफा हम क्या करें।
जान लेवा है, उन्हीं की ये अदा हम क्या करें॥

जिनको खुद हमने सिखाया है, वफाओं का शऊर।
कह रहे हैं वो हम ही से बेवफा हम क्या करें।

जो सरापा मौत का पैगाम आते हैं नजर।
दे रहे हैं, जिन्दगी की वो दुआ हम क्या करें॥

हम न कहते थे के हर इक से यूं मिलना छोड़िये।
अब तो जो कुछ भी हुआ, तू ही बता हम क्या करें॥

इश्क, कुदरत का हसीं तोहफा है, दुनियां के लिये।
लोग गर इसको समझते हैं खता तो हम क्या करें॥

जब हमारे दोस्तों ने ही दिया धोखा 'मयंक'।
फिर रकीबों से गिला, शिकवा भला हम क्या करें॥

गजल

झूम रहा हूं जिस बस्ती में मैखवारों की बस्ती है।
चारों ओर यहां पर यारो बस मस्ती ही मस्ती है॥

गम का कोई काम नहीं है, मय पी लो और गम भूलो।
इक बोतल में खुशी खरीदो देखो कितनी सस्ती है॥

वाइज तो कहता ही रहेगा, पीने वाला काफिर है।
काबे का अहसास है मय में, और काशी की मस्ती है॥

जो रिन्दों के साथ में रह कर, होश सलामत रखता है।
उसका जीना भी क्या जीना, वो हस्ती क्या हस्ती है॥

मय में गेसू की फितरत है, और नाग़िन की आदत है।
पहले अंग लिपटती है ये, फिर चुपके से डसती है॥

'मयंक' है ये चार दिनों की चांदनी जिसको कहते हैं।
पी, ले, और पिलाले वरना, फिर पस्ती ही पस्ती है॥

गजल

हर जगह दिल लगाने से क्या फायदा।
इस तरह डगमगाने से क्या फायदा।।

जो खुद अपनी हस्ती से है, बेखबर।
उसको रहबर बनाने से क्या फायदा।।

जाग कर भी जो करवट, बदलता रहा।
उस बशर को जगाने से क्या फायदा।।

जो उजाला करे, फूंक कर बस्तियां।
उन को दीप न दिखाने से क्या फायदा।।

बात जब है के तूफां का रुख मोड़ दो।
शोर-ए-तूफां मचाने से क्या फायदा।।

हुस्न वाले हैं, सब आजमाये हुये।
अब उन्हें आजमाने से क्या फायदा।।

साहिब-ए-अंजुमन गर न निकले 'मयंक'।
तो ये महफिल सजाने से क्या फायदा।।

ग़ज़ल

राज-ए-हस्ती देख कर ये चश्म हैरत बाज है।
आपका यूं, देखना, इक और वजह-ए-राज है॥

बहर-ए-हस्ती में वजूद अपना है, अब शक्ल-ए-हुबाब।
अब तो साज-ए-क्लब में बस आपकी आवाज है॥

छोड़ दूं, दामन तेरा, ये मुझ से हो सकता नहीं।
जिन्दगी का अब तू ही, दम साज है, हम राज है॥

जो भी डूबा चश्म-ए-बेखुद में, उभर कर ही रहा।
इन्तहा कब है, यहां आगाज ही, आगाज है॥

गर्क करके गौहर-ए-मकसद से दामन भर दिया।
बा खुदा इस ना खुदाई पर जहां को नाज है॥

जाम टकराने से जो, आई सदा सी बज्म में।
तोड़कर होने लगे, कितना हसीं ये साज है॥

डूबते सूरज की खामोशी ने दुनिया से कहा।
तीरगी-ए-शब ही यारो जीस्त का आगाज है॥

इक 'मयंक' ही क्या है इस आलम में जान-ए-आरजू।
आपकी पायल में हस्ती गोश-बर-आवाज है॥

गजल

चलिये न मेरे साथ जमाना खराब है।
मुझसे करो न बात जमाना खराब है॥

इजहार-ए-इश्क ही नहीं उल्फत की इन्तहा।
समझो जरा ये बात जमाना खराब है॥

वादे पै अब तो आ भी जाऐ जान-ए-इंतजार।
है, मुख्तसर हयात, जमाना खराब है॥

फिक्र-ए-हुजूर, फिक्र-ए-जहां, फिक्र-ए-दोस्तां।
गम से हो क्या निजात जमाना खराब है॥

ना चीज हू मैं आपके किस काम का 'मयंक'।
थामो न मेरा हाथ, जमाना खराब है॥

●

गजल

इक नजर में किसी ने ये क्या दे दिया।
जिन्दगी को मिरी हौसला दे दिया॥

भूल बैठा फरेब-ए-मसर्रत को मैं।
आपके गम ने ऐसा मजा दे दिया॥

तुझको शान-ए-मसीहाई करके अता।
उसने मुझको गम-ए-लादवा दे दिया॥

सर कशी-ए-यजीदी, फना हो गई।
सर जो तूने शह-ए-कर्बला दे दिया॥

आपने हाथ दे कर मेरे हाथ में।
जिन्दगी को नया सिलसिला दे दिया॥

रूह को ताजगी, कल्ब को रोशनी॥
ऐ 'मयंक' उसने हर मुद्आ दे दिया॥

●

गजल

दुनियां की इस भीड़ में हमको दी तन्हाई लोगों ने।
कुछ दिल ने बरबाद किया कुछ आग लगाई लोगों ने।।

साथ तुम्हारा था, तो हमसे दुनियां भी खुश रहती थी।
जब से तुमने रुख फेरा है, आंख चुराई लोगों ने।।

लोगों के इस तर्जे मोहब्बत की भी क्या तारीफ करें।
जब-जब तौबा की है हमने, खूब पिलाई लोगों ने।।

तुमने तो राह-ए-उल्फत में, मोड़ पै लाके छोड़ दिया।
तुमको क्या मालूम के क्या, क्या बात बनाई लोगों ने।।

अपनी इस बद बख्ती का इल्जाम 'मयंक' अब किसको दें।
जब-जब उसने प्यार से देखा की रुसवाई लोगों ने।।

●

गजल

तू मेरे दिल में निहां है, तेरा जलवा नजर में है।
गरज ये क तेरी चाहत, मेरे कल्बओ जिगर में है।।

न आई है ना आयेगी कभी पर वाज में खामी।
तड़प तेरी मिरी हिम्मत में, मेरे बाल-ओ-पर में है।।

जो तुझको ढूंढना चाहें, निगाहों में मिरी झां कें।
तेरा साया सदा ज लवानुमा, इस चश्म-ए-तर में है।।

लुटा यूं हीं नहीं ये कारवां, मेरी मोहब्बत का।
कोई रहजन, यकीनन साथ शक्ल-ए-राहबर में है।

मेरी इन सर्द आहों से, कहीं धोखा नहीं खाना।
'मयंक' कुछ आग बाकी, आज भी कल्बओ जिगर में है।।

●

गजल

शहीद-ए-नाज जो उस पर कभी निसार हुआ।
अदा-ओ-नाज से ये हुस्न बेकरार हुआ॥

निगाह-ए-नाज से छलकी है मय, सरे महफिल।
मुझे सम्भालो, नशा आज बेशुमार हुआ॥

हर एक गम पे मैं सर निगूं हुआ यारो।
जहां तकाजा-ए-नाजओ, अदा-ए-यार हुआ॥

हुआ के रंग से रुखसार तमतमा उठे।
मिरा जो तज्किरा महफिल में बार-बार हुआ॥

खालिश जिगर की मिटी, दर्द लुत्फ देने लगा।
नजर का तीर जो अटका था, आर पार हुआ॥

उन्हें हमारी वफा पर यकीन कब था 'मयंक'।
क जिसकी याद में दामन ये तार-तार हुआ॥

गजल

जब भी होता हूं हम खयालों में।
डूब जाता हूं, कुछ सवालों में ।।

उन की यादों की है तपिश, अब भी।
मेरी आहों में मेरे नालों में।।

किसने पाई है, शान-ए रहम-ओ करम।
इन जफा केश, हुस्न वालों में।।

सिसकियां भी किसी की शामिल हैं।
मयकदे के खनकते प्यालों में।।

जुल्फ बिखरी, तो हुस्न भी बिखरा।
तीरगी खो गई, उजालों में।।

मैंने अब तक फरेब खाये हैं।
रह के शामिल खुलूस बालों में।।

एहद-ए-माजी की तरह हमको।
एक दिन पाओगे रिसालों में ।।

अब जवानी के दिन 'मयंक' कहां।
झुर्रियां पड़ गई हैं गालों में।।

ग़ज़ल

चाहिए पास-ए-अदब अर्जे तमन्ना के लिए।
जैसे होते हैं किनारे, मौज-ए-दरया के लिए।।

मर मरी रंगत लिए, इक नाजनी ने यूं कहा।
कोई इक नुक्ता लगा दे, हुस्न-ए-जैबा के लिए।।

रूह में मेरी नहीं, जिसके बजुज कोई कशिश।
दिल तड़पता है, उसी हुस्न-ए-सरापा के लिए।।

दूर जब होती गई, ऐश-ओ-तरब की मंजिलें।
मांग ली हमने दुआ, फिर गम के सहरा के लिए।।

ईद का ये चांद हर घर में खुशी कबै लाये है।
चांद चूड़ी है शिकस्ता, एक बेवा के लिए।।

इक यही अरमान लेकर उम्र काटी है 'मयंक'।
चाहिए कुछ तो खालिश, कल्ब-ए-शिकस्ता के लिए।।

गजल

आई कलियों पै जब जब जवानी।
उनकी खारों ने की पास वानी॥

जिनमें रक्सां थी, खुद जिन्दगानी।
अब उन आंखों से बहता है पानी॥

कौन था, कौन हूं, कुछ बताओ।
भूल बैठा मैं, अपनी कहानी॥

अंजुमन से उठू को उठा कर।
दूर कर दो मेरी बदगुमांनी॥

मैंने तूफां की जब, जब खबर की।
बात मेरी किसी ने न मानी॥

क्यूं 'मयंक' इस पै करता गुमां तू।
चंद घड़ियों की है ये जवानी॥

गजल

इस दिल-ए-नाकाम में जब से तुम्हारी याद है।
हर घड़ी महसूस होता है कि घर आबाद है॥

यूं तो इस दिल ने भुला दीं सैकड़ों बातें मगर।
याद है इस दिल में तो अब तक तुम्हारी याद है॥

दर्द दिल सीने से चलकर लब पै आ सकता नहीं।
आंसुओं में इसलिए इक बे जुबां फरयाद है॥

चाक कर डालूं गरेवां, और दामन तार तार।
है जिगर मजनूं की मानन्द और दिल फरहाद है॥

आदमी दुनियां में रहता ही नहीं यक्सां कभी।
आज गर ये शाद है तो कल यही नाशाद है॥

वक्त के खाकों में कितने रंग होते हैं 'मयंक'।
वक्त बिस्मिल, वक्त गुलचीं वक्त ही सैयाद है॥

ब जाहिर देखने को हमने यूं क्या-क्या नहीं देखा।
मगर ये एक हसरत है, तेरा जल्वा नहीं देखा ॥

यही अरमां लिए हाजिर हूं तेरे आस्ताने पर।
इन आंखों ने तेरे जलवे को बेपर्दा नहीं देखा ॥

खुदी का उठ गया पर्दा तो तुझको हर तरफ पाया।
इसी खातिर कभी तुझको पस-ए-परदा नहीं देखा ॥

कभी शहरों में मैं तन्हाइयां महसूस करता था।
मिले जो तुम तो फिर खुद को कभी तन्हा नहीं देखा ॥

यकीनन आह को भी डूब जाने में मजा आता।
इन आंखों में मचलता आपने दरया नहीं देखा ॥

मुझे हर दम दिया है, मेरे मांगे से सिवा तूने।
तेरे कुर्बान कः तुझ सा कोई भी दाता नहीं देखा ॥

'मयंक' होता है रोशन ये तो दुनिया देख लेती है।
है जिसकी रोशनी वो रोशनी वाला नहीं देखा ॥

गजल

हर एक सिम्त तुम्हारा ही नूर देखा है।
हर एक शै में तुम्हारा जहूर देखा है।।

तुम्हारी कुर्बते हासिल हुई मुझे जब से।
हमेशा खुद को जमाने से दूर देखा है।।

वो शख्स जो कि फरेब-ए-खुशी में आ न सका।
उस एक शख्स को क्यूं गम से चूर देखा है।।

वो जलवा आज भी रोशन है गोश-ए-दिल पर।
वो जलवा जिसको सर-ए-कोह-ए-तूर देखा है।।

किसी ने नजरें बदल लीं तो क्या ताआज्जुब है।
पड़ा जो वक्त तो साया भी दूर देखा है।।

कुसूर वार चला ढूंढने जो दुनिया में।
'मयंक' हर कहीं अपना कुसूर देखा है।।

●

गजल

उसको फूलों ही में कयास किया।
दिल के गुलशन में जिसने वास किया।।

आज उसने दिखा के आईना।
हमको भी खुदा से रुशनास किया।।

इतनी आंखों से मय पिलाई है।
तुमने हर गाम बेहवास किया।।

तुमने तब तब चुराई हैं आंखें।
हमने जब-जब भी इल्तमास किया।।

तुम तो हर वक्त शाद रहते थे।
तुमको किसने 'मयंक' उदास किया।।

●

धूप की शिद्दत में ये कार-ए-अजब कर दीजिए।
जुल्फ-ए-शबगूं खोल कर तखलीफ-ए-शब कर दीजिए॥

गम सभी खुशियों में बदलेंगे यकीनन एक दिन।
आप अजराह-ए करम चश्म-ए तरब कर दीजिए॥

या तो खुद आ जाइए या मुझको बुलवा दीजिए।
कुछ न कुछ तो मेरे जीने का सबब कर दीजिए॥

जिसको तकमिल-ए-जुनूं कहते हैं ये एहल-ए-वफा।
कल्ब में पैदा वो जज्बा चाहे जब कर दीजिए॥

जिन्दगी मिल जाएगी मेरे कमाल-ए-इश्क को।
बस 'मयंक' की इस गजल पर मोहर-ए-लब कर दीजिए॥

●

गजल

प्यार व्योपार हुआ जाता है।
क्यूं खरीदार हुआ जाता है॥

तूने जबसे मिलाई हैं नजरें।
जीना दुश्वार हुआ जाता है॥

था मसीहाई का जिसे दावा।
वो ही बीमार हुआ जाता है॥

कीजे अब जुस्तजू तबीबों की।
इश्क आजार हुआ जाता है॥

जब से बदली हैं आपने, नजरें।
फूल भी खार हुआ जाता है॥

हाल-ए-दिल जितना छिपाते हैं 'मयंक'।
उतना इजहार हुआ जाता है॥

●

ग़ज़ल

उनसे नज़र मिला के ख़ुशियां मिली हैं मुझको।
फिर दिल पे चोट खा के ख़ुशियां मिली हैं मुझको।।

मैंने तो उनकी क़ुर्बत मांगी है ज़िन्दगी भर।
कब उन से दूर जा के ख़ुशियां मिली हैं मुझको।।

मिज़राब-ए-साज़ए-हस्ती छेड़ा है जबसे तुमने।
उल्फ़त के गीत गा के ख़ुशियां मिली हैं मुझको।।

तुम ज़िन्दगी में आए जब से बहार बन कर।
हर ग़म में मुस्कुरा के ख़ुशियां मिली हैं मुझको।।

तारीकियों ने जब जब घेरा है मुझको आकर।
दिल का दिया जला के ख़ुशियां मिली हैं मुझको।।

जब भी 'मयंक' उनको मेरा ख़याल आया।
इक कैफ़-ए-नूर पा के ख़ुशियां मिली हैं मुझको।।

ग़ज़ल

जिस दिल में तड़प हो, उससे कभी आराम की बातें
मत कीजे।
आगाज-ए-मोहब्बत में हमसे अन्जाम की बातें मत कीजे॥

था वो भी जमाना के: हम तुम हर शाम-ओ-सहर मिलते थे
मगर।
उस सुबह की बातें मत कीजे, उस शाम की बातें मत कीजे॥

जो इश्क में हुक्म उदूली को इक जुर्म समझते हैं नासेह।
अब उनसे खुदारा तरदीद-ए-एहकाम की बातें मत कीजे॥

हर एहल-ए-वफा पर दुनियां ने बोहतान लगाए हैं अक्सर।
ये प्यार है इसमें जिल्लत और इल्जाम की बातें मत कीजे।।

कुरबां हैं हजारों मैखाने जिन आखों की मस्ती पै ए 'मयंक'।
उन आंखों से हम पी आए हैं, अब जाम की बातें मत कीजे॥

गजल

हमारे हाल-ए-परीशां की याद आती है।
तुम्हें भी सोख्ता सामां की याद आती है॥

मिजाज-ए-वक्त को बदला हुआ जो पाता हूं।
तुम्हारी जुल्फ-ए-परीशां की याद आती है॥

जहां की आरजी खुशियों को जो समझते हैं।
उन्हें ही दश्त-ओ-बयावां की याद आती है॥

किसी से जब भी कोई बेवफाई करता है।
न जाने क्यूं मुझे इन्सां की याद आती है॥

वो जबसे आपने डाली है इक नजर मुझ पर।
न अपने दर्द न दरमां की याद आती है॥

जो महर-ओ-माह की चलती है बात महफिल में।
तुम्हारे चेहरा-ए-ताबां की याद आती है॥

'मयंक' जब भी तुम्हें मैकदे में देखा है।
हुजूम-ए-गर्दिश-ए-दौरां की याद आती है॥

अब गमों की इन्तहा होने को है।
अब तेरा वादा वफा होने को है॥

खत तुम्हारा लेके कासिद आ गया।
अब खुशी की इन्तहा होने को है॥

चांद तारों की तो महफिल सज गई।
बस कोई नगमा सरा होने को है॥

तुम जो आए तो महक उठा चमन।
सुर्ख रू बाद-ए-सबा होने को है॥

ए-'मयंक' अब छोड़दे फिक्र-ए-मुआशा।
देख अब वक्त-ए-दुआ होने को है॥

●

गजल

खुद अपना जिन्हें एहसास नहीं, तकरीर की बातें करते हैं।
ये शेख-ओ-बिरहमन क्यूं अक्सर तकसीर की बातें करते हैं॥

इन्सान अगर चाहे तो भला क्या काम नहीं कर सकता है।
महनत से जो घबरा उठते हैं, तकदीर की बातें करते हैं॥

रुस्वाई के डर से उल्फत में मिलते हैं जो अक्सर छुप छुप कर।
क्या जाने वो क्यूं गुमनामी में तशहीर की बातें करते हैं।

जब दिल की तड़प शामिल ही नहीं जब फिक्र-ओ-नजर हासिल ही नहीं।
वो एहल-ए-कलम तखलीफ में क्यों तासीर की बातें करते हैं॥

शादाब वही रहते हैं 'मयंक' उनको ही मिली है मंजिल भी।
काहिल होकर तकदीर के जो तदबीर की बातें करते हैं॥

●

अश्क पी कर जो मुस्कुराया है।
उसने मेरा मिजाज पाया है।।

जो मुझे बेवफा समझता था।
आज मुझ पर यकीन लाया है।।

अपने दिलबर की राह में हमने।
जां लुटाई है, दिल बिछाया है।।

काश दिल भी तेरा हंसी होता।
जैसी तेरी हसीन काया है।।

दिल को कब खौफ है हवादिस का।
मौज-ए-तूफान का ये जाया है।।

गौर खुद पर भी कर कभी ए दोस्त।
तेरे कद से बड़ा तो साया है।।

अर्श में ढूंढ लो 'मयंक' को तुम।
ये सितारों में छुप के आया है।।

जो मेरी आंख तर नहीं होती।
दर्द-ए-दिल की खबर नहीं होती।।

गर तुम्हारी नजर नहीं होती।
जिन्दगी यूं बसर नहीं होती।।

जिसमें जलते हों दीप नफरत के।
ऐसी शब की सहर नहीं होती।।

जो तुम्हारे खयाल में गुम हो।
उसकी अपनी खबर नहीं होती।।

तुम जो आब-ए-हयात दे देते।
जिन्दगी तल्ख तर नहीं होती।।

उंगलियां आप चूम लेते तो।
ये गजल बे बहर नहीं होती।।

आप गर जहमत-ए-दुआ करते।
फिर दुआ बेअसर नहीं होती।।

दुख से परदा न गर उठाते 'मयंक'।
रोशनी इस कदर नहीं होती।।

ग़ज़ल

आपकी जो नज़र हो गई।
जिन्दगी पुर असर हो गई।।

आशियां बन न पाया था कि।
बिजलियों को खबर हो गई।।

उनका दामन जो हाथ आ गया।
राह खुद राह बर हो गई।।

साथ जुटा तुम्हारा तो फिर।
जिन्दगी डर बदर हो गई।।

जब 'मयंक' उनकी उल्फत मिली।
जिन्दगी मुख्तसर हो गई।।

●

ग़ज़ल

बुर्जुस की सोहबत से सबक हमको मिला है।
इरफान-ए-खुदी ही फकत इरफान-ए-खुदा है।।

हमको तो हुई इस तरह पहचान खुदा की।
जिस वक्त खुदी मिट गई जाना कि खुदा है।।

ये दर्स दिया गौस से हम सबको यकीनन।
सूफी है वो गुनाह से जो पाक हुआ है।।

जिसने भी शिआर अपना शरीअत को बनाया।
बन्दा वो खुदा का सभी बन्दों से बड़ा है।।

अब दूर हों किस तरह जमाने से अंधेरे।
अफसोस 'मयंक' आज घटाओं में छुपा है।।

●

गज़ल

आ गए हम दरमयान-ए-कार जार।
दुश्मनान-ए-हिन्द हो जा होशियार॥

बुजदिलो छुप छुप के क्यों करते हो वार।
सामने आकर तो देखो एक बार॥

गो के पृथ्वी राज के वारिस हैं हम।
हम नहीं छोड़ेंगे तुझको बार बार॥

इस तरह हस्ती मिटायेंगे तेरी।
मिल न पाएगा कोई भी गम गुसार॥

कहते हैं कुर्बानियों की दास्तां।
जख्म सीने पर लगे जो बे शुमार॥

बज्मे-ए-हस्ती से मिटा देंगे तुझे।
है हमें बस उस घड़ी का इन्तजार॥

प्यार से इक बार गर मांगों 'मयंक'।
हम करेंगे तुम पै अपनी जां निसार॥

गजल

देख लीजे जो देखा नहीं।
जिन्दगी का भरोसा नहीं।।

गम की शिद्दत उसे क्या पता।
दिल कभी जिसका टूटा नहीं।।

आओगे ख्वाब में किस तरह।
मुद्दतों से मैं सोया नहीं।।

जिसको चाहत समर की रहे।
बाग में खार बोता नहीं।।

बदनसीबी मेरी देखिए।
जो भी चाहा वो होता नहीं।।

पार तूफां से हो जाते हम।
ना खुदा जो डुबोता नहीं।।

दिल के बदले में दिल लीजिए।
इससे बढ़ कर के सौदा नहीं।।

तुमने बदनाम मुझको किया।
बे सबब यूं ही रुस्वा नहीं।।

प्यार होता है यूं ही 'मयंक'।
प्यार करने से होता नहीं।।

गजल

अब जरा लुत्फ से काम लो।
लगजिशों में मुझे थाम लो॥

कुछ सफर की भी है इन्तहा।
दो घड़ी को तो आराम लो॥

वक्त गुजरा उसे भूलिए।
होने वाली है अब शाम लो॥

हश्र तक जो रखे सुर्खरू।
पाक इरादों से वो नाम लो॥

वो जो पेश-ए-नजर है मयंक।
होश से तुम भी कुछ काम लो॥

●

गजल

चिराग आप बुझता हुआ देख लोगे।
मेरे इश्क की इन्तहा देख लोगे॥

वजूद अपना हर हाल में खो चुकोगे।
उसे जब भी जल्वा नुमा देख लोगे॥

अंधेरों में जिसने दिखाई थी राहें।
सहर को वो दीपक बुझा देख लोगे॥

यकीनन यकीनन बदल जाओगे तुम।
जो सर से गुजरती कजा देख लोगे॥

'मयंक' अपनी फितरत से हर सू दिखेगा।
जो सू-ए-फलक तुम जरा देख लोगे॥

●

गजल

नजर फरेब-ए-कजा खा रही है आ जाओ।
हयात मौत से टकरा रही है आ जाओ॥

सुनहरी धूप की चादर बिछाये बैठे हैं।
नई सहर भी ये कजरा रही है आ जाओ॥

तुम्हारे इश्क में मरने की आरजू है मगर।
कजा भी पास नहीं आ रही है आ जाओ॥

गये वो दिन के: मैं हंसता था दूसरों पै कभी।
के: आज खुद पै हंसी आ रही है आ जाओ॥

जबान-ए-गुल पै यही है सदा 'मयंक' सुनो।
खिजां सिफत ये बहार आ रही है आ जाओ॥

●

गजल

उसे हयात न कहिये के: जिसमें राहत हो।
वो जीस्त मौत से बदतर है जिसमें फुर्सत हो॥

गम-ए-जुदाई का इक जाम दे उन्हें साकी।
जरा उन्हें भी तो अन्दाज-ए-मोहब्बत हो॥

वफा की राह में जो कुछ हो हंसके सह जाओ।
किसी से कोई गिला हो, न कुछ शिकायत हो॥

गजल के रंग में हालात-ए-दिल सुनाऊं तुम्हें।
अगर ये सुनने की तुमको जरा तो फुर्सत हो॥

चमक 'मयंक' की मद्धम हमें दिखाई दे।
जो बे निकाब रुख-ए-यार की जियारत हो॥

●

गजल

जर्फ की मीजान पर हर दोस्त पहचाना गया।
वो जरा सी बात पै रूठे तो याराना गया॥

मैं जो उनकी बज्म से दामन झटककर उठ गया।
खुश हुए कहने लगे अच्छा है दीवाना गया॥

लोग दिल की बात से हमको न पहचाने कभी।
बस फटे हालों से ही आशिक को पहचाना गया॥

वो भी कैसा रिन्द होगा, जिसकी खातिर दोस्तो।
पेशवाई के लिए खुद पीर-ए-मैखाना गया।

करदे तू रोशन जहां को फितरत अपनी ऐ 'मयंक'
चांद अपनी रोशनी से ही सदा जाना गया॥

गजल

रोज आते हैं जो जाने के लिए।
काश दे दें जहर खाने के लिए॥

दिल लगाना और दिल को तोड़ना।
है तमाशा इस जमाने के लिए॥

दे नहीं सकते सवालों के जवाब।
बस खफा हैं वो दिखाने के लिए॥

दुश्मनों की आजमाइश क्या कहें।
दोस्त आते आजमाने के लिए॥

दिल हमें अपना कोई दे दे 'मयंक'।
चाहिए दिल, दिल लगाने के लिए॥

गजल

मेरी निगाह से देखे कोई कि तू क्या है।
मैं क्या बताऊं कि इस दिल की आरजू क्या है॥

जो धो सके न मेरा खून अपने दामन से।
वो मुझसे पूछते हैं सुर्खिए लहू क्या है॥

अगर वो प्यार के बदले में प्यार देगा हमें।
तो हम बतायेंगे इस दिल की आरजू क्या है॥

है उस मुकाम पै मश्क-ए-तसुव्वुरात मेरी।
समझ में कुछ नहीं आता कि रूबरू क्या है॥

'मयंक' मेरे ही दम से है रोशनी हरसू।
मैं ही ये सोच रहा हूं कि चार सू क्या है॥

●

गजल

हम उनसे प्यार करते हैं, वो हमसे प्यार करते हैं।
मगर ये भी हकीकत है बयां करने से डरते हैं॥

न पूछें आप तस्वीर-ए-वफा कैसे बनाते हैं।
नजर के रंग के बदले जिगर का रंग भरते हैं॥

हमारे प्यार की बातों को, वो अक्सर भुला बैठें।
जिन्हें तन्हाइयों में रात दिन हम याद करते हैं॥

मिरा दिल है कि कोई रहगुजार-ए-आम है यारो।
इधर से काफिले यादों के रह रह के गुजरते हैं॥

अगर हम शाद हों, चेहरे बहारों के उतर जायें।
इसी से दिल की बातें कब 'मयंक' इजहार करते हैं॥

●

गजल

दीवाने आज बज्म में ऐसे मचल गये।
उनकी नजर उठी तो कई दौर चल गये।।

फुर्कत की रात आपका पैगाम जो मिला।
खुशियों के साथ आंखों से आंसू निकल गये।।

तुमने कभी जफाओं में छोड़ी नहीं मगर।
फितरत तुम्हारी देख के हम खुद सम्भल गये।।

वो कह रहे थे जान की बाजी लगायेंगे।
क्यों कर बिसात-ए-इश्क में आकर बदल गये।।

ये हुश्न देखकर मिरी उल्फत का ये 'मयंक'।
कुछ को खुशी हुई है तो कुछ लोग जल गये।।

ग़ज़ल

तुमने उल्फत का जब से सिखाया चलन।
झूम उठी, नाच उठी, मोज-ए-गंगो जमन।।

हम भी बाजार में बिक गये सर बसर।
जब खरीदार देखा कोई जान-ए-मन।।

मरने वालों की है बस यही आरजू।
सुर्ख जोड़े में आये वो बन कर दुल्हन।।

सो गये दिल के अरमान सारे मगर।
रात भर उनकी यादों में जागे नयन।।

ये 'मयंक' आरजू का जहां लुट गया।
बिन किसी के लगा जिन्दगी में गहन।।

गजल

थोड़ा सा कहा आप मिरा मान लीजिये।
फिर चाहे शौक से ये मेरी जान लीजिये॥

हम आपके रहे हैं सदा आपके हुजूर।
बस दिल की इस अदा को जरा जान लीजिये॥

जो कुछ था पास आप पे कुर्बान कर दिया।
ये जान क्या है दौलत-ए-ईमान लीजिये॥

फिर कह रहा है ये दिल-ए-मुफलिस बसद खुलूस।
है आप पर ये दो जहां कुर्बान लीजिये॥

हर इक पै ऐ 'मयंक' भरोसा न कीजिये।
अपने पराये को जरा पहचान लीजिये॥

ग़ज़ल

मुझको जब भी परेशान करते हैं वो।
कस्र सब मेरे वीरान करते हैं वो॥

मंदिरों और शिवालों से देकर अजां।
कुफ्र को मेरे ईमान करते हैं वो॥

पहले पीकर के हैवान बनता था मैं।
अब पिला करके इन्सान करते हैं वो॥

जिनको चलना सिखाया था हमने कभी।
रहनुमाई का ऐलान करते हैं वो॥

जो मौहब्बत से दामन बचाते रहे।
अब तसव्वुर में हैरान करते हैं वो॥

वो हमीं हैं, हमीं हैं, हमीं हैं 'मयंक'।
जिन्दगी जिस पै कुर्बान करते हैं वो॥

है खुशी उनकी खुशी में आज कल।
गम नहीं है जिन्दगी में आज कल।।

उनकी यादें उनके चर्चे ही मेरी।
ढल रहे हैं आरती में आज कल ।।

देख कर हरसू तसब्बुर में उन्हें।
कैफ-सा है बन्दगी में आज कल ।।

देख उनको चांद भी शरमा गया।
है कमी कुछ चांदनी में आज कल ।।

कम सुखन भी हैं सुखन वर ऐ 'मयंक'।
देख बज्म-ए- शायरी में आज कल।।

ग़ज़ल

तुम अगर खुद की हस्ती समझ जाओगे।
चांद तारों से ऊंचा जहां पाओगे॥

गर खयालों को अपने रखोगे बुलंद।
हर बुलंदी पर खुद ही नजर आओगे॥

पहले खुद को ही ढूंढ़ो कः खुद क्या हो तुम।
जुस्तजू में खुदा को भी पा जाओगे॥

गर मिटाओगे हस्ती जहां के लिए।
नाम कुछ करके दुनियां को दिखलाओगे॥

आज का काम कल पर न छोड़ो 'मयंक'।
वरना इस जिन्दगानी में पछताओगे॥

●

गजल

दिल में मौज ए—शबाब आ जाए।
फिर नया इन्कलाब आ जावे॥

गर निगाहों में झांक लो मेरी।
जिन्दगी पर शबाब आ जावे॥

मस्त नजरों से गर इशारे हों।
आज-खुल के शबाब आ जाये॥

हुस्न जर्रात से उबलने लगे।
वो अगर बेनिकाब आ जाए॥

वो निगाहें जो फेर लें ए—'मयंक'।
वक्त अपना खराब आ जाये॥

ग़ज़ल

हम नहीं वो जो रो-रो के मर जायेंगे।
हम तो हर ग़म में हंस कर गुजर जायेंगे ॥

आपने अपना वादा निभाया अगर।
अपने भी कुछ इरादे सबर जायेंगे ॥

उनकी नजरों में आने की है आरजू।
गो जहां की नजर से उतर जायेंगे ॥

उन पै इल्जाम आने न देंगे कभी।
हम तो खुद से भी यारों मुकर जायेंगे ॥

एक तेरी जुस्तजू के सहारे 'सनम'।
हम हर एक रह गुजर से गुजर जायेंगे ॥

देख लेना किसी चमन में 'मयंक'।
प्यार के फूल खिल कर बिखर जायेंगे ॥

गजल

है वो ही इन्सां बड़ों को जो बड़ाई दे सके।
आंख के तिल में उसे दुनियां दिखाई दे सके॥

है उसी एक लम्ह-ए-बेदर्द की मुझको तलाश।
जो गिरे दिल के लिये दर्द-ए-जुदाई दे सके॥

मैं समझता हूं कः इनको फिर भी झिझका ही रहे।
गर हरीसों को खुदा सारी खुदाई दे सके॥

अब वो ही मोहसिन है अपना जो कः आये और हमें।
इस मुसल्सज कैद-ए-हस्ती से रिहाई दे सके॥

लोग कहते हैं कि आती है हमें आवाज-ए-दोस्त।
हम तो जब जाने 'मयंक' हम को सुनाई दे सके॥

●

गजल

वो जो आये चमन पर शबाब आ गया।
फिरत-ए-गुल में भी इन्कलाब आ गया॥

जज्बा-ए-इश्क जब सर्द होने लगा।
लेके कासिद खतों का जवाब आ गया॥

उनकी आंखों का जब जिक्र होने लगा।
खुद ब खुद सारो जिक्र-ए शराब आ गया॥

वो जफा भूल कर रहे हैं वफा।
देखिये वक्त कैसा खराब आ गया॥

गम की बदली से जब भी निकला 'मयंक'।
तीरा रातों पै तब-तब शराब आ गया॥

●

गजल

जब नजर खुद जबां हो गई।
दिल की हालत अयां हो गई॥

मौत आई तो ऐसा लगा।
जिंदगी जावदां हो गई।

हमको पहचानते क्यों नहीं।
क्या नजर नातवां हो गई॥

वो तसव्वुर में जब आ गये।
दिल की धड़कन जबां हो गई॥

राह ऐसी दिखाई 'मयंक'।
हर गली कहकशां हो गई॥

●

गजल

मालूम क्या था हमको ये अंजाम इश्क का।
तो भूल कर भी लेते नहीं नाम इश्क का॥

जिसने किया है इश्क वो जिन्दा ही मर गया।
है मौत का पयाम ही पैगाम इश्क का॥

हम तुमसे इश्क करके ये समझे हैं ऐ सनम।
खुद को फरेब देना है एक नाम इश्क का॥

समझा है हमने फलसफा-ए-इश्क बस यही।
आशिक की जान लेना है बस काम इश्क का॥

जाये 'मयंक' जान तो जाये हजार 'बार'।
हाथों से हम न देंगे कभी जाम इश्क का॥

●

गजल

मोह लेता है, मन धीरे-धीरे।
आपका बाँकपन धीरे-धीरे॥

वार करते हैं हम पर मुसल्सल।
आपके ये नयन धीरे-धीरे॥

हिज्र में जां मेरी ले ही लेगी।
देखिए ये घुटन धीरे-धीरे॥

आ ही जायेगा उनको जहां में।
दोस्ती का चलन धीरे-धीरे॥

मेरी आमद से सजने लगेगी।
आपकी अंजुमन धीरे-धीरे॥

दूर वो झुक रहा है जमीं पर।
देखियेगा गगन धीरे-धीरे॥

आपके मन में जलने लगेगी।
प्यार की अगन धीरे-धीरे॥

देख कर सब तुम्हें मुस्कुरायें।
हो के मन में मगन धीरे-धीरे॥

ऐ 'मयंक' उनके गेसू को छू कर।
चल रही ही पवन धीरे-धीरे॥

गजल

जो भी उनका सताया हुआ है।
अश्क-ए-गम से नहाया हुआ है।।

प्यार का दीप पूछो न कैसे।
आंधियों से बचाया हुआ है।।

छोड़िये बात कुछ और कीजे।
ये फंशाना सुनाया हुआ है।।

कब से राहों में उनकी वफा का।
हमने दीपक जलाया हुआ है।।

राज-ए-दिल ऐ 'मयंक' हमने उनका।
अपने दिल में छुपाया हुआ है।।

गजल

हर खुशी पर छा गये गम आपके जाने के बाद।
कितने तन्हा हो गये हम आपके जाने के बाद॥

अब न कोई आरजू है और न कोई जुस्तजू।
है सभी अरमान बेदम आपके जाने के बाद॥

अब न कोई गुल खिलेगा और न चटकेगी कली।
इस कदर बदला है मौसम आपके जाने के बाद॥

आपसे होकर जुदा हर एक बशर है गम जदा।
हर किसी की आंख हैं नम आपके जाने के बाद॥

किस तरह सुलझायेंगे हम जिन्दगी की उलझनें।
जिन्दगी में पड़ गये खम आपके जाने के बाद॥

है उदासी जिन्दगी के साज पर कुछ इस तरह।
हो गई खामोश सरगम आपके जाने के बाद॥

सबके होंठों से तबस्सुम रूठ कर रुखसत हुआ।
बस उदासी का है आलम आपके जाने के बाद॥

अपकी फुर्कत की घड़ियां काटते कटती नहीं।
वक्त की रफ्तार है कम आपके जाने के बाद॥

अश्क आंखों में लिए श्रद्धांजली देता 'मयंक'।
है झुका हर दिल का परचम आपके जाने के बाद॥

●

नोट—मेरे बड़े भाई श्री महेश चन्द्र कर्वम को नजराने-ए-
खुलूस भगवान उनकी रूह को शान्ति प्रदान करे।
—'मयंक'

गजल

हम अपने प्यार का तुमसे सिला न मागेंगे।
वफा करेंगे मगर हम वफा न मागेंगे॥

हम अपने आप रुख-ए-हादसात बदलेंगे।
जो भीख में मिले वो आसरा न मागेंगे॥

तुम्हारे हिज्र में लज्जत मिली है कुछ ऐसी।
तुम्हारे वस्ल की हरगिज दुआ न मागेंगे॥

तुम्हारा हाथ मिला है यही बहुत-कुछ है।
हम अपना हद्दे तलब से सिवा न मागेंगे॥

हमें जो दर्द का दरमां मिले तो हम हरगिज।
किसी तबीब से दिल की दवा न मागेंगे॥

नई फजाओं से इस दर्जा दिल है घबराया।
'मयंक' अब कभी ताजा हवा ना मागेंगे॥

गजल

क्या समां था, हम थे, तुम थे और कोई भी न था।
थी खुशी हरसू गमों का दौर कोई भी न था॥

थी मौहब्बत अपनी अजमत पर सभी के कल्ब में।
अंजुमन में नफरतों का शोर कोई भी न था॥

इस कदर खुशियां मिली थीं कुर्बतों से आपकी।
आहो-गम का जिन्दगी में ठौर कोई भी न था॥

एहल-ए-जर कुछ इस तरह दौलत के दावेदार थे।
मुफिलसों की रोटियों का कौर कोई भी न था॥

आपने बस आपने समझा 'मयंक' को दोस्तो।
उसकी जब हालत पै करता गौर कोई भी न था॥

●

गजल

दर्द सहिए दर्द का दरमां मिलेगा आपको।
शादमानी का हर एक सामां मिलेगा आपको॥

लाल गुदड़ी में मिला करते हैं अक्सर हम नवां।
मुफिलसों में भी रुख-ए-ताबां मिलेगा आपको॥

दौर-ए-हाजिर में चखो या मत चखो फल पाप का।
बाग में हर शाख पर शैतां मिलेगा आपको॥

दोस्तों से जब करेंगे आप उम्मीद-ए-वफा।
हर कहीं टूटा हुआ पैमां मिलेगा आपको॥

तीरगी-ए-शब में गर हो जाए दीदार-ए-'मयंक'।
रोशनी होगी रुख-ए-जानां मिलेगा आप को॥

●

ग़ज़ल

उनका हर राज छुपा लूंगा वो आयें तो सही।
खुद को हम राज बना लूंगा वो आयें तो सही॥

वो जो आयेंगे अन्धेरे में तो, मैं इश्कों के।
दीप पलकों पै जला लूंगा वो आयें तो सही॥

उनको हर गर्दिश-द-दौरां से बचाने के लिये।
मैं दिलो जां में छुपा लूंगा वो आयें तो सही॥

मुझको मालूम है, वो प्यार का देंगे न सिला।
फिर भी हर नाज उठा लूंगा वो आयें तो सही॥

काश महमां मेरे बन कर वो 'मयंक' आ जायें।
दिल की मसनद प बिठा लूंगा वो आयें तो सही॥

गजल

काम ऐसा कीजिये कुछ नाम हो।
हर तरफ सबको सुख आराम हो।।

किस तरह वादे पर वो कायम रहें।
जिसका हाथों में छलकता जाम हो।।

कोई भी मजहब हो, सब का हो अजीज,
प्यार हर एक धर्म का पैगाम हो।।

हर बशर को दोनों जगह हों अजीज।
चाहे काबा हो, कः काशी धाम हो।।

प्यार करना गर नहीं कोई गुनाह।
किसलिये तुम इश्क में बदनाम हो।।

उनसे रिश्ता तोड़ना मुमकिन नहीं।
कुछ भी चाहे अब 'मयंक' अंजाम हो।।

गजल

हर हंसी है आपसे ये मुस्कुराना आपसे।
ये फजायें ये हंसी मौसम सुहाना आपसे ।।

आप सब के दिल की बातें जानते हैं इसलिये।
किसलिए कोई बनावेगा बहाना आपसे ।।

आप से गजलें हैं, नज्में हैं हर एक संगीत है।
हमने सीखा है खुशी का गीत गाना आपसे ।।

आपकी आंखों से जो पी ले न आए होश में।
महफिल-ए-मय आपसे पीना पिलाना आपसे।

आपसे हैं ये सितारे, आपसे हैं ये 'मयंक'।
अर्श की इस चांदनी का झिलमिलाना आपसे ।।

गजल

इश्क भी क्या कमाल है साहिब।
चीज ये बेमिशाल है साहिब ॥

कोई नेअमत कहे, कोई गुनहा।
अपना अपना खयाल है साहिब ॥

चांद सूरज से भी सिवा यारो।
उनका हुस्न-ओ-जमाल है साहिब ॥

जिसने अन्जाम पै नजर की है।
वो परेशान हाल है साहिब ॥

अब नजर में है, उनका अक्स-ए-हसीं।
अब तो दिल पायमाज है साहिब ॥

हिज्र में गम है वस्ल में गम है,
इश्क पै हम बवाल है साहिब।

ग़ज़ल

वो मिरा अरमां भरा दिल तोड़ कर क्यों चल दिये;
ग़म, अलम, आहों से रिश्ता तोड़ कर क्यों चल दिये।

तीर सहने में मजा मिलता था मुझको रात दिन;
बोलिये, दिल के फफोले फोड़ कर क्यों चल दिये।

दुश्मनों ने दोस्ती का हाथ जब आगे किया;
दोस्त सारे यक ब यक मुंह मोड़ कर क्यों चल दिये।

मैं खुद तर्क-ए-ताल्लुक पर बहुत ग़मगीन हूं;
उनसे ये पूछो कि वो दिल तोड़ कर क्यों चल दिये।

भीड़ में अंजान चेहरों की बताओ ये 'मयंक';
इस तरह तुम मुझको तन्हा छोड़ कर क्यों चल दिये।

●

ग़ज़ल

जब कभी नग़मा साज होता हूं,
वक्फ-ए-सोज ओ-गुदाज होता हूं।

वसल की शब अगर न आयें वो,
मैं बड़ा ग़मनवाज होता हूं।

मुझको ग़म और खुशी रहे यकसां,
जब कभी बेनियाज होता हूं।

सर निगूं हो के उनकी महफिल में,
खद भी महव-ए-नमाज होता हूं।

उनकी बंदा नवाजियों में 'मयंक',
मैं ब हाल-ए-आयाज होता हूं।

●

गजल

चली आइए महरबां, हौले, हौले,
चले प्यार का कारवां, हौले, हौले।

जिगर को तुम अपने जरा थाम लेना,
सुनायेंगे हम दास्तां हौले, हौले।

कदम से कदम हम मिला के चलेंगे,
बनेंगे वफा के निशां हौले, हौले।

मौहब्बत का इजहार जब हम करेंगे,
वो खोलेंगे अपनी जबां हौले, हौले।

निकाब उसने रुख से उठाया कुछ ऐसे,
निकलने लगी मेरी जां हौले, हौले।

यूं ही उनको नग्मे सुनाये चला जा,
'मयंक' होंगे वो शादमां हौले, हौले।

ग़ज़ल

उठाई जो उसने नजर धीरे-धीरे,
तड़पने लगे दिल जिगर धीरे-धीरे।

मोहब्बत करेगी असर धीरे-धीरे,
इधर धीरे-धीरे, उधर धीरे-धीरे।

वो पर्दे से बाहर निकलते हैं ऐसे,
कि बादल से जैसे कमर धीरे-धीरे।

अभी रात बाकी है; कुछ और ठहरो,
कि होने को है अब सहर धीरे-धीरे।

पता वो मोहब्बत के मारों से लेकर,
'मयंक' आ गए मेरे घर धीरे-धीरे।

ग़ज़ल

हुस्न की इबादत का क्या हसीन मंजर है।
मन्दिरों में अब्दुल है, मस्जिदों में शंकर है॥

इक तरफ कन्हैया की सांवरी सुरतिया है।
इक तरफ तसब्बुर में जल्वा-ए-पयम्बर है॥

जिसको तुमने खोया था उसको मैंने पाया है।
वो तुम्हारी किस्मत थी, ये मेरा मुकद्दर है॥

तुमने धर्म की खातिर जितने घर उजाड़े हैं।
उनमें कोई मस्जिद है, कोई उनमें मंदिर है॥

ऐ 'मयंक' यूं उनकी जुस्तजू में फिरते हैं।
पांव में तो छाले हैं, आंखों में समन्दर है॥

जो ओढ़े दुखड़े रहते हैं।
वो उखड़े उखड़े रहते हैं।।

इस हुस्न की बस्ती में यारो।
कुछ चांद के टुकड़े रहते हैं।।

अब सबके होंठों पर मेरे।
गीतों के मुखड़े रहते हैं।।

जो, सच्चे लोग हैं दुनिया में।
वो सिमटे सिकुड़े रहते हैं।।

अब अपने सीने में ऐ 'मयंक'।
कुछ दर्द के टुकड़े रहते हैं।।

ग़ज़ल

जाते जाते ये किताब-ए-खान लेते जाइये।
तुमने बख्शी है जो झूठी शान लेते जाइये॥

या तो कीजियेगा मेरी जानिब निगाह-ए-लुत्फ फिर।
गर वहीं मुमकिन तो मेरी जान लेते जाइये॥

और तो क्या पेश करता तोहफा-ए-उल्फत तुम्हें।
ठहरिये अश्कों का ये तूफान लेते जाइये॥

आपसे मतलब है मेरा आपसे है बेदली।
जा रहे हो तो ये सब सामान लेते जाइये॥

आपके वादे से थी रोशन 'मयंक' की जिन्दगी।
हो अगर मुमकिन तो वो पैमान लेते जाइये॥

गज़ल

इक अदना इशारे पर आओगे एक दिन।
ये रस्म-ए-वफा भी निभाओगे इक दिन।।

तुम्हारे लिए मयकदा छोड़ आये।
यकीं ये है खुद ही पिलाओगे इक दिन।

मिटेंगे यकीनन ये शिकवे शिकायत।
जो सीने से मुझको लगाओगे इक दिन।।

ये रंगत चमन की सिवा और होगी।
जो गुलशन में तुम मुस्कराओगे इक दिन।।

'मयंक' आपसे रूबरू क्यों न होगा।
जो चेहरे से परदा उठाओगे इक दिन।।

प्यार मुझको जिन्दगानी से तुम्हारा चाहिए।
कुछ न कुछ तो मुझको जीने का सहारा चाहिए॥

तुम कहो तो वक्त का रुख मोड़कर रख दूं सनम।
बस तुम्हारा एक हल्का सा इशारा चाहिए॥

गर तेरी कुर्बत मुझे मौज-ए-हवादिस में मिले।
फिर भला तूफान में किसका सहारा चाहिए॥

जो भटकती जिन्दगी को रास्ता दिखला सके।
तीरगी-ए-जीस्त को ऐसा सितारा चाहिए॥

अर्श में अख्तर शुमारी रात भर करता 'मयंक'।
क्योंकि इसको मरमरी शब का इशारा चाहिए॥

ग़ज़ल

जब तेरा वादा वफ़ा हो जायेगा।
दूर हर शिकवा गिला हो जायेगा॥

मैं मनाने जाऊंगा तुमको सनम।
जब कभी भी तू खफा हो जायेगा॥

तुम चलाओगे अगर तीरे नजर।
दर्द-ए-दिल बढ़कर सिवा हो जायेगा॥

बस लाताफत के लिए छेड़ा जिसे।
क्या खबर थी वो खफा हो जायेगा॥

थाम लेना तू मुझे ऐ साफिया।
जब मुझे तेरा नशा हो जायेगा॥

नींद आंखों से उड़ेगी दिल का चैन।
जब तुम्हें इल्म-ए-वफा हो जायेगा॥

जुस्तजू है बस उन्हीं लम्हात की।
जिन पलों में तू मिरा हो जायेगा॥

वो चमक उठेगा इक दिन बिल यकीं।
ऐ 'मयंक' जो भी तेरा हो जायेगा॥

ग़ज़ल

वक़्त ने छीन ली रानाइयां।
अब तो मैं हूं और मेरी तनहाइयां॥

धूप में जब छोड़ कर तुम चल दिये।
हमसफर थीं बस मेरी परछाइयां॥

मुझको निस्बत खुद जमाने से नहीं।
क्या बिगाड़ेंगी मेरा रुस्वाइयां॥

जो भी डूबे इश्क में उभरे नहीं।
इस समन्दर में हैं वो गहराइयां॥

कौन कहता है अकेला है 'मयंक'।
है अजल से साथ में तन्हाइयां॥

ग़ज़ल

समन्दर किस कदर शोरीदा सर है।
किनारों पर भी तूफानों का डर है॥

उड़ानों की तरफ माइल है दुनिया।
नजर हर एक की परवाज पर है॥

जिसे अब तक लहू से हमने सींचा।
गुलिस्तां आज वो ही बे समर है॥

पड़ोसी से हो अपना दोस्ताना।
तो फिर अपने शहर में किसका डर है॥

मिलेगी मंजिल-ए-मकसूद कैसे।
लुटेरा आज हर इक राहबर है॥

खबर कैसे रखेगा वो जहां की।
जो अपने आपसे खुद बेखबर है॥

'मयंक' इस जिन्दगी का क्या भरोसा।
ये पल में शाम है, पल में सहर है॥

खुद अपना दामन-ए-ईमां तुम्हें बचाना है।
वगर ना सोचो जमाना तो फिर जमाना है।।

नजर से आपकी घायल सभी जमाना है।
निशां से तीर का रिश्ता बड़ा पुराना है।।

बसे हैं लोग यूं दरिया के कुछ जजीरों में।
कः जैसे पार समन्दर के इक खजाना है।।

उठाओ जाम कः बादल मचल रहे हैं हुजूर।
करीब आओ कः मौसम बड़ा सुहाना है।।

जो तुम हंसे तो जमाने पे आ गई है बहार।
तुम्हारे हुस्न से पुर कैफ ये जमाना है।।

बला से मेरी जमाना हंसे मेरे ऊपर।
मुझे तो रोते हुओं को सदा हंसाना है।।

'मयंक' मुझको उभरने की आरजू ही नहीं।
किसी की झील सी आंखों में डूब जाना है।।

गजल

चमन में कैफ सितारों में रोशनी कम है।
जो क्या गए कि हर इक चीज महव-ए-मातम है।।

जो तुम निकाब उठाओ तो नूर है वरना।
दयार-ए-नूर में तीरा शबी का आलम है।।

जो तू हंसे तो हर इक फूल मुस्करा उठे।
तेरे मिजाज से वाकिफ मिजाज-ए-मौसम है।।

तुम ही गजल हो रुबाई हो, नग्मा भी तुम हो।
तुम्हारे दम से मेरी शायरी में दम खम है।।

गजल 'मयंक' की तुम गुनगुना रहे हो इधर।
उधर हवाओं में इक पुर लतीफ सरगम है।।

●

गजल

बा कद्र-ए जौक खुद मेरी ताब-ए-नजर नहीं।
हां उसकी जल्वागाह कोई बाम-ओ-दर नहीं।।

सारा जहान घर है, हमारा ऐ दोस्तो।
उनके बगैर कोई भी घर अपना घर नहीं।।

यूं तो जमाने भर की नजर है मेरी तरफ।
लेकिन अगर नहीं तो बस, उनकी नजर नहीं।।

तुम से ही शाम, शाम थी, तुम से ही रात रात।
जो तुम नहीं तो आह वो नूर-ए-सहर नहीं।।

अक्सर 'मयंक' सोचता रहता है अर्श पर।
उनके बगैर रात क्यों होती बसर नहीं।।

●

गजल

अगर तेरी निगाहों का ये मैखाना नहीं होता।
तो हर रिन्द-ए-बला कश तेरा दीवाना नहीं होता॥

जहां के खौफ से हम मैकदे में मिल नहीं पाते।
तेरा आना नहीं होता, मेरा जाना नहीं होता॥

अगर दैर-ओ-हरम के बीच में इक मैकदा होता।
तो हिन्दू और मुस्लिम का ये अफसाना नहीं होता॥

जनाब-ए-शेख का दौलतकदा हम ढूंढ ही लेते।
अगर मस्जिद की राहों में ये मैखाना नहीं होता॥

सभी के दिल में ईश्वर है अगर ये मान लेते हम।
तो ये मस्जिद नहीं होती, ये बुतखाना नहीं॥

'मयंक' इस मय की फितरत को अगर पहचान लेते हम।
कोई भी शख्स इस बोतल का दीवाना नहीं होता॥

गजल

प्यार करते नहीं, तो क्या करते,
उन पै मरते नहीं, तो क्या करते।

फूल बनकर के उनकी राहों में,
हम बिखरते नहीं तो क्या करते।

जिस पै तुम महरबान हो उसके,
दिन संवरते नहीं तो क्या करते।

तुम ही सोचो, तुम्हारी फुर्कत में,
आह भरते नहीं, तो क्या करते।

उनकी नजरों के रास्ते दिल में,
हम उतरते नहीं तो क्या करते।

उनकी उल्फत में जां निसार 'मयंक';
कर गुजरते नहीं, तो क्या करते।

गजल

रोज पीता हूं छोड़ देता हूं,
तौबा करता हूं तोड़ देता हूं।

जब भी आती है हाथ में बोतल,
उसकी गर्दन मरोड़ देता हूं।

जाम-ए-उल्फत में दिल की बोतल का,
कतरा-कतरा निचोड़ देता हूं।

जो मोहब्बत से हो नहीं लबरेज,
जाम-ओ-मीना, वो फोड़ देता हूं।

जब मिलें शेख जी तो रुख अपना,
जानिब-ए-दैर मोड़ देता हूं।

जाम टकरा के साथ साथ 'मयंक',
टूटे रिश्तों को जोड़ देता हूं।

ग़ज़ल

अश्क जो मुस्करा के पीते हैं,
वो जमाने पै छा के पीते हैं।

उनकी मस्ती का जिक्र क्या है कि जो,
उनसे नजरें मिला के पीते हैं।

भूलने के लिए तुम्हें अक्सर,
अपनी हस्ती भुला के पीते हैं।

जो किसी का न हो सका अब तक,
उसको अपना बना के पीते हैं।

जिन्दगी झूम झूम उठती है,
आपको जब पिला के पीते हैं।

पी के जो लोग डगमगा उठे,
उनसे दामन बचा के पीते हैं।

कुछ सितारे तो शाम ही से मयंक,
मेरे नजदीक आ के पीते हैं।

ग़ज़ल

क्यूं हवा लग गई, फसाने को,
क्या खबर है भला ज़माने को।

ये न पूछो कि अश्कबार हूं क्यूं,
तूल मत दीजिये फ़साने को।

मासिवा गम ये कुछ नहीं देता,
हाय क्या हो गया ज़माने को।

शाम कहती है उनको याद करो,
सुबह कहती है भूल जाने को।

उनकी बस इक नज़र ही काफी है,
मेरा हर रंजो-गम मिटाने को।

आ भी जाओ 'मयंक' की सूरत,
जगमगा दो गरीबखाने को।

गजल

सभी बंदे हैं ईश्वर के सभी ईमान वाले हैं,
मगर जो है वतन के वो निराली शान वाले हैं।

यहां हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई हैं सभी लेकिन,
मगर ये सब असल में एक हिन्दुस्तान वाले हैं।

उन्हें साहिल पे रहने दो जो साहिल से बहुत खुश हैं,
शफीक वो निकलेंगे कि जो तूफान वाले हैं।

वतन के वास्ते हम हंसते-हंसते जान दे देंगे,
जो कुर्बान हो वतन पर बस वही कुछ आन वाले हैं।

मेरे भारत में हर एक धर्म के इन्सान रहते हैं,
कहीं भगवान वाले हैं कहीं रहमान वाले हैं।

'भवंक' अपना बना लेते हैं हम अगयार को अक्सर,
कि हम गंगो जमन वाले निराली शान वाले हैं।

गजल

याद जिस वक्त भी उनकी आने लगी;
दिल की हर इक कली मुस्कराने लगी।

जब भी ख्वाबों की दुनियां में वो आ गए;
कोई किस्मत मेरी जगमगाने लगी।

तुम न आए ढली शब इधर और उधर;
चांद तारों को भी नींद आने लगी।

आप वरहम हुए तो कुछ ऐसा लगा;
जिन्दगी अब मुझे आजमाने लगी।

जब कभी मुस्करा कर मिले आप तो;
शर्म-ए-आरजू झिलमिलाने लगी।

आ भी जाओ 'मयंक' आज भी बज्म में;
शाम ढलने लगी रात आने लगी।

गजल

कुछ तो अरमानों ने इक तूफां उठाया रात भर;
कुछ हमें तुमने भी दीवाना बनाया रात भर।

हमने यूं फुर्कत का हर लमहा बिताया रात भर;
नाम लिखा आपका, लिख कर मिटाया रात भर।

आंसुओं के रात भर दीपक जलाते ही रहे;
आपकी राहों को हमने जगमगाया रात भर।

मेरी हर इक आरजू के गुन्च-ओ-गुल खिल उठे;
वो तसब्बुर में जो मेरी मुस्कराया रात भर।

मेरा क्या है अपनी भी हालत पै करियेगा नजर,
क्या हुआ क्यों चैन तुमको भी न आया रात भर।

रात भर उनको सताते ही जगाते ही रहे;
उनकी पेशानी पै फिर भी बल न आया रात भर।

वक्ते सुबहा जो हुआ हमसे जुदा हंस कर मयंक;
हां उसी जालिम की यादों ने सताया रात भर।

गजल

अब तक मुझे अकेले रुखे जाना की याद है;
उस माहरू की उस महे तावां की याद है।

तुम इक झलक दिखाके चले आए और हमें;
अब तक हरेक दीदए—हैरां की याद है।

करते भी वज्ञ शिकायतें तर्जे जफा की जब;
हमको किसी के हुस्ने पशेमां की याद है।

जो चन्द रोज बाद ही वापस चला गया;
वावस्ता दिल से बस उसी मेहमां की याद है।

मौसम की तरह जिसने परेशां किया 'मयंक'।
अब तक हमें उस अन्वे—परेशां की याद है।

गजल

वक्त की धूप सह कर जो पक जाओगे;
चांद सूरज की तरह चमक जाओगे।

गर तदब्बुर के नगमे सुनोगे मेरे;
खुद न खुद अंजुमन में थिरक जाओगे।

भूल पायेंगे तुम को न ऐह ले—वतन;
हंस के फांसी पै जो तुम लटक जाओगे।

बात सच्ची कहोगे अगर दोस्तो;
तुम जहां की नजर में खटक जाओगे।

जिन्दगी भर न निकलोगे तुम भी कभी,
गेसुए यार में जो अटक जाओगे।

दीनों-दुनियां की अजमत मिलेगी मयंक,
ले के रब की जो दिल में झलक जाओगे।

गजल

गर मुनासिब हो तो फिर ऐसा करें,
वो हमें और हम उन्हें देखा करें।

जो उभरते शक्स के कायल हों वो,
डूबते सूरज को क्यों सजदा करें।

काश आमद हो चमन में आपकी,
फूल की तरह सदा महका करें।

ये तड़प ये आरजू और ये तलब,
जुस्तजू में आपकी भटका करें।

कितने दिल टूटेंगे तारों की तरह,
आप भीगी जुल्फ न झटका करें।

वो न आए और न आयेंगे 'मयंक',
लाख उनके ख्वाब हम देखा करें।

●

गजल

जो के दिल का क्या करें और हमनवा का क्या करें,
जो न मंजिल तक चले उस रहनुमा का क्या करें।

डालियां टूटीं, झड़े पत्ते कली मुरझा गई,
कोई समझाए तो इस जोरे हवा का क्या करें।

पास में अपने न कोठी है न कारें हैं न जर,
जो नुमाइश पर मरे उस दिल रुबा का क्या करें।

शब का सन्नाटा है तारीकी है तुम भी दूर हो,
अश्के गम का क्या करें दिल की सदा का क्या करें।

चांद ही से जगमगाया करती है हर एक शब,
जो 'मयंक' से दूर हो ऐसी जिया का क्या करें।

●

ग़ज़ल

सह कर भी सितम आपको रुसवा नहीं करते,
ऐसा नहीं करते कभी ऐसा नहीं करते।

बीमार तुम्हारे हैं मगर ये भी वजा है,
दिल को कभी ममनूने मसीहा नहीं करते।

कुछ सोच के झुकाते हैं हम सर को अदब से,
हर आस्तां पे हम कभी सजदा नहीं करते।

है रोजे अजल से यही एक हुस्न की आदत,
वादे तो किया करते हैं पूरा नहीं करते।

तौबा का तो वादा किया करते हैं ये मैकश,
वादा नहीं तोड़ेंगे ये वादा नहीं करते।

होते हैं वही लोग परेशान 'मयंक' आज,
आगाज में अन्जाम जो सोचा नहीं करते।

●

ग़ज़ल

आ भी जाओ रात भी जाने लगी,
चांद तारों को भी नींद आने लगी।

आरजू-ए-दीद जागी रात—भर,
निगह-ए-उम्मीद पथराने लगी।

तुम मिले थे राह में हंस कर कभी,
जिन्दगी फिर ठोकरें खाने लगी।

आ गई अपनी परेशानी की याद,
जब तुम्हारी जुल्फ लहराने लगी।

शब गुजारी इन्तजारे यार में;
ऐ 'मयंक' अब हमको नींद आने लगी।

●

ग़ज़ल

मौजे तूफां से समन्दर का पता मांगेंगे,
यानी दुश्मन से तेरे घर का पता मांगेंगे।

जिसके दर पर झुके खुद अपनी जबीने-उल्फत;
हम फकत आपसे उस दर का पता मांगेंगे।

फितने ठोकर में है, तेवर में कयामत उबके;
हुस्न वालों ही से महशर का पता मांगेंगे।

जिसके जलवों से है दिल आयना खाना अपना;
आज हम उस परी पैकर का पता मांगेंगे।

क्या खबर थी कि यूं बदलेगा जमाना इक दिन;
काफिले वाले भी रहबर का पता मांगेंगे।

अब 'मयंक' हम पै है उन मस्त निगाहों का करम;
अब न साकी का न सागर का पता मांगेंगे।

ग़ज़ल

आप हैं गर शराबखाने में,
क्यूं है महशर शराब खाने में।

कुछ सुकूने जिगर मिले शायद,
देखें चल कर शराबखाने में।

हो इजाजत तो हम भी टकरायें,
तुमसे सागर शराबखाने में।

बात क्या है कि बात होती है,
तुमसे अक्सर शराब खाने में।

काफिले को मिलेगी क्या मंजिल,
जब है रहबर शराबखाने में।

दर्दे दिल की दवा मयंक सुनो,
है मयस्सर शराबखाने में।

गजल

तुम्हें वाकई हमसे उल्फत नहीं है,
फसाना है बस ये हकीकत नहीं है।

वफाओं की बातें वो करते हैं क्यों कर,
वफादारियां जिनकी फितरत नहीं हैं।

वो दर्द मोहब्बत को समझेंगे कैसे,
जिन्हें दर्द सहने की आदत नहीं है।

जवानी तुम्हारी है बस चन्द रोज,
ये धोका है धोका हकीकत नहीं है।

सभी से 'मयंक' अपना है दोस्ताना,
किसी से भी हमको अदावत नहीं है।

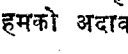

गजल

जो बेवफा हैं करेंगे वफा कभी न कभी,
हमें वो प्यार से देंगे सदा कभी न कभी।

हमें यकीन है ये दोस्त रंग लायेगा,
खुलूसो प्यार का ये सिलसिला कभी न कभी।

यकीन मानिए देना पड़ेगा उनको भी,
हमारे हक में सही फैसला कभी न कभी।

खिजां के बाद यकीनन बहार आयेगी,
रहेगी फिर के मुखालिफ हवा कभी न कभी।

हमारी राह की दुश्वारियां मिटाने को,
बनेंगे आप मेरे रहनुमा कभी न कभी।

पहुंच ही जाएगा मंजिल पै उनके साथ 'मयंक',
हमारे प्यार का ये काफिला कभी न कभी।

गज़ल

गर मयस्सर शराब है यारो,
हर खुशी बेहिसाब है यारो।

मैकदे में है रोशनी हरसू,
साकिया बेनकाब है यारो।

सच तो ये है कि मेरे सागर में,
उनका अक्से शबाब है यारो।

मैकशों पर है बेखुदी तारी,
साकिया बेहिजाब है यारो।

सामने है 'मयंक' वो जिसकी,
हर नजर में शराब है यारो।

गज़ल

हम जो नजरें मिलाते नहीं,
इस तरह डगमगाते नहीं।

आप जबसे हमें मिल गए,
हम कहीं और जाते नहीं।

वो जो पर्दा उठाते नहीं,
नूर में हम नहाते नहीं।

मर ही जाते बिना मौत हम,
तुम जो अपना बनाते नहीं।

दिल की बातें होती अयां,
काश आंसू बहाते नहीं।

होश खोते न हम इस तरह,
वो जो जलवा दिखाते नहीं।

किस तरह गम छिपाते 'मयंक',
हम अगर मुस्कराते नहीं।

ग़ज़ल

बेसहारे सलाम करते हैं,
ग़म के मारे सलाम करते हैं।

तुमको दोनों जहां के ऐ आका,
चांद तारे सलाम करते हैं।

खूबसूरत फ़जाओं के मंजर,
और नजारे सलाम करते हैं।

जो सहारे हैं तुम से वाबस्ता,
वो सहारे सलाम करते हैं।

हम जियारत को दूर से आकर,
दिल के हारे सलाम करते हैं।

ये 'मयंक' आप पर निछावर हैं,
और तारे सलाम करते हैं।

ग़ज़ल

अब मैं पत्थर तलाश करता हूं,
गोया शंकर तलाश करता हूं।

आपके पास तक जो पहुंचा दे,
वो मुकद्दर तलाश करता हूं।

जो कि मंजिल का दे पता मुझको,
ऐसा रहबर तलाश करता हूं।

खुद मुझे भी तो ये नहीं मालूम,
किसको अक्सर तलाश करता हूं।

गर्क हो जायें जिसमें कल्बो नजर,
वो तसव्वुर तलाश करता हूं।

देख कर जिसको आंख भर आए,
ऐसा मंजर तलाश करता हूं।

इन कयामत भरी निगाहों में,
रोजे महशर तलाश करता हूं।

जो तसव्वुर में है उसे क्यूं मैं,
आज दर-दर तलाश करता हूं।

पैर अपने पसार लूं जिसमें,
ऐसी चादर तलाश करता हूं।

डूबने के लिए उन आंखों में,
मैं समन्दर तलाश करता हूं।

जो वतन के लिए कटे हंस कर,
आज वो सर तलाश करता हूं।
जिसका इन्सानियत ही मजहब हो,
वो पयम्बर तलाश करता हूं।
जो 'मयंक' आ नहीं सके दिन में,
उनको शब भर तलाश करता हूं।

●

गजल

गम छिपाना बड़ा जरूरी है,
मुस्कराना बड़ा जरूरी है।
उनकी राहों में रोशनी के लिए,
दिल जलाना बड़ा जरूरी है।
शाने महफिल अगर बढ़ानी है,
उनका आना बड़ा जरूरी है।
जो निगाहों से दूर हैं उनकी,
भूल जाना बड़ा जरूरी है।
बोझ दिल का उतारने के लिए,
गुनगुनाना बड़ा जरूरी है।
ऐ 'मयंक' उनकी राह में तेरा।
जगमगाना बड़ा जरूरी है॥

●

ग़ज़ल

नफ़रतों से प्यार की हर शय मिटा दी आपने;
दिल में जो रोशन थी वो शमां बुझा दी आपने।

आप हिकमत की न बातें कीजिए हमसे हुजूर;
दर्द बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा दी आपने।

जुल्फ़े जाना से रिहाई की तमन्ना छोड़ दी;
जुर्मे उल्फत भी हमें ऐसी सजा दी आपने।

आरजू दीदार की कैसे उठा पायेगी सर;
मेरी मैयत इस कदर गहरी दबा दी आपने।

आपकी आमद से दिल का हर सुकूं जाता रहा;
सोये जज्बातों में जब हलचल मचा दी आपने।

हर अंधेरा जिन्दगी से दूर तर होने लगा;
प्यार से जब जिन्दगानी जगमगा दी आपने।

जख्म दिल के फूल की मानिन्द खिल उठे सभी
अपने दामन से इन्हें जिस दम हवा दी आपने।

मैं खुदा का बन्दाए-ना चीज हूं और कुछ नहीं;
क्यूं जिबी अपनी मेरे दर पर झुका दी आपने।

मुद्दतों से आपके दीदार का तालिब था मैं;
शुक्रिया ऐ जानेमन सूरत दिखा दी आपने।

करके इजहारे मुहब्बत अन्जुमन में सबके;
मेरे जीके प्यार की अज्मत बढ़ा दी आपने।

खुद यजीदी भी पशेमां थे शहादत पर कि जब;
अपने ईमां के लिए गर्दन कटा दी आपने।

जान और ईमान की बाजी लगा कर प्यार में;
बेवफाई की मेरी आदत भुला दी आपने।

मैं इधर जाऊं, उधर जाऊं, किधर जाऊं जनाब;
जिन्दगी किस मोड़ पर लाकर बिठा दी आपने।

प्यार से हर एक के दिल में किया घर इस तरह,
दश्त में एक प्यार की बस्ती बसा दी आपने।

आपके इस फैसले पर रश्क आता है हमें;
उम्र भर कैद मुहब्बत की सजा दी आपने।

दुश्मने जां दुश्मने दिल आप हैं मेरे अगर;
बनके कातिल जिन्दगी की क्यों दुआ दी आपने।

यूं लगा जैसे कि सूरज की कोई फूटी किरण;
जिस घड़ी रुखसार से चिलमन हटा दी आपने।

दोस्ताना हो गया था जब मेरा मझधार से;
क्यूं मेरी किश्ती किनारे से लगा दी आपने।

आसमां भी रो उठा जोके शहादत पर कि जब,
कर्बला में जान की बाजी लगा दी आपने।

जब कभी भी सैरे-गुलशन को चले आए जनाब;
बुलिसतां को कैफ फूलों को अदा दी आपने।

जिन्दगी भर होश में आना मेरा मुमकिन नहीं,
दो शराबे-इश्क आंखों से पिला दी आपने।

भूल बैठा आज को और आने वाले कल को मैं;
याद गुजरे वक्त जब भी दिला दी आपने।

सफरतों के बीहड़ों में और बियावां में 'मयंक',
हर तरफ इक प्यार की गंगा बहा दी आपने।

●

गजल

जानेमन तुम सलामत रहो,
बन के कैफे-मसर्रत रहो।

एहले दिल की दुआ है यही,
ताकयामत कयामत रहो।

दरअसल मेरे गुलजार की,
बनके तुम बू-ओ निकहत रहो।

जिन्दगी उसकी है जिन्दगी,
आप जिसकी अमानत रहो।

ऐ 'मयंक' उनसे कह दो कि तुम,
मेरी गजलों की शोहरत रहो।

●

गजल

दिल लगाने की बातें न कर,
गम उठाने की बातें न कर।

मुस्कराने की बातें न कर,
गम छिपाने की बातें न कर।

शक्स के रूबरू ए शमां,
जगमगाने की बातें न कर।

जिसमें मेरा न हो तजकिरा,
उस फसाने की बातें न कर।

जब न तुमको बुलाये कोई,
रूठ जाने की बातें न कर।

शैख के रूबरू हमनवा,
मय पिलाने की बातें न कर।

साजे दिल है शिकस्ता अगर,
उस पै गाने की बातें न कर।

रूठ कर जा रहा हो उसे,
लौट आने की बातें न कर।

जो न मुफलिस के काम आ सके,
उस खजाने की बात न कर।

मैं हूं खुद्दार मुझ पै कभी,
रहम खाने की बातें न कर।

जिसको बुलबुल ने गाया न हो,
उस तराने की बातें न कर।

आने वाला है वक्ते सुकूं,
जुल्म ढाने की बातें न कर।

मुश्किलों से मिले आज हम,
अब तू जाने की बातें न कर।

हिर्स के बाग के प्यार का,
गुल खिलाने की बातें न कर।

करके चर्चे रकीबों के तू,
दिल जलाने की बातें न कर।

यार की राह है पुरखतर,
आने जाने की बातें न कर।

उनकी आंखों में हैं बिजलियां,
आशियाने की बातें न कर।

इस जमाने में रह कर 'मयंक',
उस जमाने की बातें न कर।

गजल

लीजिए वो नाम उठते बैठते,
जिससे हो आराम उठते बैठते।

हो गया बदनाम उठते बैठते,
ये दिल नाकाम उठते बैठते।

दिल लगा कर बेवफा से बेवजह,
ले लिया इल्जाम उठते बैठते।

उनकी आंखों से सदा पीता हूं मैं,
प्यार ही के जाम उठते बैठते।

प्यार जिसको भी मिला कुछ आपका,
बन गया गुलफाम उठते बैठते।

आपकी कुर्बत से मुझको मिल गए,
आज चारों धाम उठते बैठते।

इश्क में जो मिट गए बस हो गए,
उनके किस्से आम उठते बैठते।

नफरतों के शहर में देता 'मयंक',
प्यार का पैगाम उठते बैठते।

दर्द दिल में अश्क आंखों में छिपाना सीख लो,
गोया रह कर के गमों में मुस्कराना सीख लो।

सीख ही जाओगे इक दिन तुम मुहब्बत का चलन,
शर्त ये है कि जरा वादा निभाना सीख लो।

राजे दिल कुछ भी जमाने पर आया होगा नहीं,
हिज्र जाना में अगर तुम मुस्कराना सीख लो।

आपकी तनहाइयां मिट जाएगी इक दिन जरूर,
हां, तसव्वुर में जरा हमको बुलाना सीख लो।

गुल अगर है तो हिफाजत के लिए कांटे भी हैं,
तुम भी यूं तामीर करना आशियाना सीख लो।

इस तरह रुसवाइए-दुनिया से तुम बच जाओगे,
हंस के हर दर्दो अलम को भूल जाना सीख लो।

भूलकर ईमां धरम हमरिन्द बन जाओगे तुम,
साथ मेरे बैठ कर पीना पिलाना सीख लो।

खुशबुओं से प्यार की कहकशां इक दिन अंजुमन,
आंसुओं से यार की महफिल सजाना सीख लो।

दर्द दिल का खुद दवा बन जाएगा इक दिन 'मयंक,'
दर्द दिल की तुम अगर दरमां बनाना सीख लो।

गजल

दीद हासिल मुझे आपकी हो गई,
तो मयस्सर मुझे हर खुशी हो गई।

आपने रुख से पर्दा उठाया था जब,
हर तरफ रोशनी रोशनी हो गई।

आपने प्यार से जब निहारा मुझे,
खूबसूरत मेरी जिन्दगी हो गई।

इस जहां मिरी हो गई दुश्मनी,
आपसे जो मेरी दोस्ती हो गई।

तर्क रिश्ते हुए सब जहां से 'मयंक',
हमसफर आब से आवारगी हो गई।

●

गजल

जब किनारों ने किनारा कर लिया,
हमने तूफां में गुजारा कर लिया।

दिल के रिश्ते जब न जुड़ पाए कभी,
तोड़ कर दिल पारा पारा कर लिया।

जब शबे फुर्कत में वो याद आ गए,
दिल में झांका और नजारा कर लिया।

जो अहद हमने किया करके रहे,
इस जहां ने क्या हमारा कर लिया।

उनके गुलशन की इबारत के लिए,
हमने हर सहरा गवारा कर लिया।

ए मयंक अपने भी जब अपने न बने,
हमने गैरों को हमारा कर लिया।

●

गजल

गम की सियाहियों से निकलने तो दीजिए,
कुछ दिल के इस चराग को जलने तो दीजिए।

ठोकर पै आप ठोकरें मारेंगे किस तरह,
गिरते हुए बशर को सम्हलने तो दीजिए।

मिल जायेंगी बुलंदियां हुस्नो शबाब को,
हम आशिकों का नाम उछलने तो दीजिए।

कुछ हम भी सम्भल जायेंगे इक रोज दोस्तो,
कुछ उनके इरादों को बदलने तो दीजिए।

वादाए शब निभायेंगे, आएंगे हम जरूर,
सूरज को आसमान में ढलने तो दीजिए।

वो प्यार के सैलाब में डूबेंगे ए 'मयंक',
इस चश्मे मुजतरिब को उबलने तो दीजिए।

●

गजल

मत निगाहें फेरिये मतलब निकल जाने के बाद,
कौन पूछेगा तुम्हें कल हुस्न ढल जाने के बाद।

गिर के उठने का हुनर सीखा जो हमने आपसे,
बारहा मुमकिन नहीं गिरना सम्भल जाने के बाद।

रात में छिप छिप के मिलने की जिसे आदत रहे,
किस तरह तुमसे मिले वो रात ढल जाने के बाद।

गो जवानी ढल गई, फिरतर न बदली आपकी,
आज भी बाकी है बल रस्सी के जल जाने के बाद।

रात भर तुम भी चमक लो, रात अपनी है 'मयंक',
क्या करोगे तुम बताओ, रात ढल जाने के बाद।

●

गजल

साथ हमको आपका जबसे सुहाना मिल गया,
जिन्दा रहने का हमें भी इक बहाना मिल गया।

आपकी कुर्बत से भटकेंगे नहीं हम उम्र भर,
आज इक भटके मुसाफिर को ठिकाना मिल गया।

इस तरह याद आ गया जो गम दिया था आपने,
जिस तरह खोया हुआ साथी पुराना मिल गया।

खामशी को कुब्बते गुफ्तार आखिर मिल गई,
ताइरे-कुन्जे कफस को चहचहाना मिल गया।

जब पुकारा आपने अपना समझ कर ऐ 'मयंक',
तब उदासी में लवों को मुस्कराना मिल गया।

●

गजल

जज्बे उलफत चाहिए जश्ने गजल के वास्ते,
उनकी कुर्बत चाहिए जश्ने गजल के वास्ते।

साज और आवाज का फन भी जरूरी है मगर,
अच्छी सोहबत चाहिए जश्ने गजल के वास्ते।

जुस्तजू-ए-बेहतरी महफिल ही काफी है नहीं,
उसकी रहमत चाहिए जश्ने गजल के वास्ते।

अश्क हों या हों तबस्सुम दर्द हो या कुल्फतें,
एक दौलत चाहिए जश्ने गजल के वास्ते।

यूं तो कहने को ये जिल्वत भी गनीमत है 'मयंक',
फिर भी खिल्वत चाहिए जश्ने गजल के वास्ते।

●

गजल

देखकर तू ऐ मेरे दिल मत मचल जाने गजल,
क्या भरोसा आज है आए न कल जाने गजल।

क्यूं न इसको हम कहें यारो निशाते-गुलसितां,
ऐश का तामीर करता है महल जाने गजल।

ढूंढ़ता हूं उसको जिसके वास्ते जिन्दा हूं मैं,
लेके आया आज पशानी पै बल जाने गजल।

कैफियत तारी न हो जाए कहीं बेसाखता,
कह रहा है ऐ दिले नादां सम्भल जाने गजल।

ऐ दिले नादां तुझे दुनिया से क्या है वास्ता,
हम मनाएंगे कहीं खिलवत में चल जाने गजल।

दोस्ती कर रोशनी से तीरगी से दुश्मनी,
कह रहा है गारे-नफरत से निकल जाने गजल।

अलमह अल्लह साज और आवाज की ये मस्तियां,
ऐ 'मयंक' इसका नहीं मैमुल बदल जाने गजल।

ग़ज़ल

देखकर कानों में उनके बालियां,
झूम उठी फूलों की नाजुक डालियां।

तेरी आंखों की करूं तारीफ क्या,
मय की है ये दो छलकती प्यालियां।

आंखों आंखों में उड़ा लेती हैं दिल,
खूब हैं ये दिल चुराने वालियां।

जब से देखा प्यार से तुमने मुझे,
मेरे घर आंगन में हैं खुशहालियां।

बज्म में हरसू बिखर जायेगा रंग,
जब भी आ जाएंगी मोरावालियां।

देखकर मुझको बजाते हैं 'मयंक',
मेंहदी वाले हाथों से वो तालियां।

गज़ल

वो जो बनने संवरने लगे,
आइने रक्स करने लगे।

उनका दस्ते करम जो हुआ,
मेरे गेसू संवरने लगे।

मंजिलें जब न आईं नजर,
रहबरी से वो डरने लगे।

जब न वो मस्जिदों में मिला,
हम किसी बुत पै मरने लगे।

जिक्र दीवानों का जब चला,
सब मेरा जिक्र करने लगे।

यादे माजी जो आई 'मयंक'
दौरे हाजिर से डरने लगे।

ग़ज़ल

अब नहीं जायेंगे उनके साथ मैखाने में हम,
ढूंढ़ लेंगे मस्तियां कुछ दिल के पैमाने में हम।

जब कभी महलों में हम को कुछ सुकूं मिलता नहीं,
बस चले जाते हैं अक्सर अनेक काशाने में हम।

उसे निभाना ही पड़ेगा, अब कोई चारा नहीं,
भूल कर जो दिल लगा बैठे हैं अनजाने में हम।

जब शहर की भीड़ में कुछ भी सुख मिलता नहीं,
तब तलाशे अमन को जाते हैं वीराने में हम।

बोझदा कल्बो जिगर में रात दिन पिनहा रहा,
ढूंढ़ते रहते थे अक्सर जिसको बुतखाने में हम।

स्याह शब में जब 'मयंक' आया निकल कर अर्श में,
वस्ल के लमहे गंवा बैठे थे अरमाने में हम।

गजल

हर वक्त जो के कहत: हमारी ही भूल है,
ऐसे बशर से दिल का लगाना फिजूल है।

मेरी वफाओं का वो वफाओं से दे सिला,
उस नाजनीं के नाज उठाना कुबूल है।

सूरत तो है भली गो के सीरत न हो भली,
ऐसी हंसी गुलाब तो कागज का फूल है।

तेरे हंसी शबाब की तारीफ क्या करूं,
रौजा-ए-ताज भी तेरे पांवों की धूल है।

क्या हादसा हुआ है बताओ मुझे 'मयंक',
चेहरा उदास उदास है और दिल मलूल है।

गजल

मध्यम है नूर चांद सितारों में आज कल,
खिलते नहीं हैं फूल बहारों में आज कल।

दुल्हन की डोलियां न उठें, जानते हो क्यों,
दमखम नहीं रहा है कहारों में आज कल।

साहिल को छोड़ जानिबे-तूफान ऐ-रुख करो,
देखो जो तुम दरार खानों में आज कल।

सुन कर के मेरी दास्तां करने लगे हैं लोग,
मेरा शुमार प्यार के मारों में आज कल।

लगजिश है मेरे पावों में बहकी मेरी नजर,
डूबा हुआ हूं मस्त नजारों में आज कल।

दीवार है शकिस्ता सहारा न लो 'मयंक',
अब दम नहीं रहा है सहारों में आज कल।

ढूंढ़ता हूं सवेरा तेरी बज्म में,
खो गया है उजाला तेरी बज्म में।

तूने आंखों से इतनी पिलाई मगर,
फिर भी हूं आज प्यासा तेरी बज्म में।

जिसको देखो उड़ाता है मेरा मजाक,
बन गया है तमाशा तेरी बज्म में।

साथ में याद तेरी है फिर भी मगर,
हूं बड़ा ही अकेला तेरी बज्म में।

जोकि तेरी मुहब्बत न हासिल हुई,
हो गया मुफ्त रुसवा तेरी बज्म में।

अब न कोई है अपना जहां में 'मयंक'
किस पै कर लें भरोसा तेरी बज्म में।

यूं तो हर एक शख्स का ईमान होना चाहिए,
कब्ल इसके वो मगर इन्सान होना चाहिए।

हो जहां शिव की अजानें और खुदा की आरती,
वो इबादतगाह हिन्दुस्तान होना चाहिए।

हो नहीं जिसकी कलम पाबंद मजहब से कभी,
हर कवि शायर मियां रसखान होना चाहिए।

एक तरफ मुस्लिम पढ़ें गीता-ओ-रामायण पुरान,
हिन्दुओं का शहबर कुरआन होना चाहिए।

गीत कितने भी लिखें शायर मगर ये ध्यान दें,
एकता हर गीत का उन्वान होना चाहिए।

मोमिनों के जेहन में सूरत कन्हैया की रहे,
हिन्दुओं के कल्ब में रहमान होना चाहिए।

ऐ 'मयंक' इस हिन्दू से बढ़ कर कोई मजहब नहीं,
हिन्द पर हर शख्स को कुर्बान होना चाहिए।

गजल

हर कोई ले ले जहां में जोग ये मुमकिन नहीं,
इस जहां को छोड़ दें सब लोग ये मुमकिन नहीं।

जन्म लेते ही गमों का सिलसिला चलने लगे,
जन्म से बढ़कर हो कोई रोग ये मुमकिन नहीं।

कौन रोता है किसी के वास्ते यूं उम्र भर,
जिन्दगी भर हो किसी का सोग ये मुमकिन नहीं।

भूख से जो मर गया पंगत हो उसकी कर्ज से,
रूह तक पहुंचे कभी भी भोग ये मुमकिन नहीं।

आसमां ये रात में चमके अगर हरसू 'मयंक'
चांदनी को तुम कहो संजोग ये मुमकिन नहीं।

जनाब के. के. सिंह 'मयंक' हिन्दी और उर्दू की गजलों, शेर-शायरी के लिए एक जाना माना नाम है। अब तक उर्दू और हिन्दी में आपकी अनेक गजलें, शायरी की पुस्तकें हिन्दी-उर्दू के मशहूर प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हो चुकी हैं।
आपकी गजलें, आकाशवाणी, दूरदर्शन पर भी आ चुकी हैं। अजीज नाजा, अख्तर आजाद, शंभु शंकर, शकीला बानो भोपाली जैसे गजल गायक अपनी गजलों के द्वारा लाखों दर्शकों, श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन कर चुके हैं।
उन्हीं की ताजातरीन गजलों का संग्रह 'तनहाइयां' प्रकाशित है। गजलों, शेर-शायरी के शौकीन पाठकों के लिए एक मधुर, मनोहर, अनमोल उपहार।

साधना पॉकेट बुक्स

जनाब के. के. सिंह 'मयंक' हिन्दी और उर्दू की गजलों, शेर-शायरी के लिए एक जाना माना नाम है। अब तक उर्दू और हिन्दी में आपकी अनेक गजलें, शायरी की पुस्तकें हिन्दी-उर्दू के मशहूर प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हो चुकी हैं। आपकी गजलें, आकाशवाणी, दूरदर्शन पर भी आ चुकी हैं। अजीज नाजा, अख्तर आज़ाद, शंभु शंकर, शकीला बानो भोपाली जैसे गजल गायक अपनी गजलों के द्वारा लाखों दर्शकों, श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन कर चुके हैं।

उन्हीं की ताजातरीन गजलों का संग्रह 'तनहाइयां' प्रकाशित है। गजलों, शेर-शायरी के शौक़ीन पाठकों के लिए एक मधुर, मनोहर, अनमोल उपहार।

साधना पॉकेट बुक्स